# शर्तों पर बच्चे

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Sharton Par Bachche (Children on Condition)
Cover Page picture : Baby
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : sushmajee@yahoo.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

# Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

## Contents

सीरीज़ की भूमिका ..... 4
बच्चे शर्तों पर ..... 5
1 जादूगरनी का सिर ..... 7
2 खाल की बीमारी वाला आदमी ..... 19
3 ग्वालिन रानी ..... 36
4 राजकुमार ..... 47
5 कैलेबाश का बच्चा ..... 68
6 बाज़ कभी चोरी क्यों नहीं करता ..... 81
7 राजकुमार और फकीर ..... 88
8 आदमी जो सम्पूर्ण बनना चाहता था ..... 97

# सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

# बच्चे शर्तों पर

देश विदेशों की लोक कथाओं में बहुत सारी कथाऐं ऐसी मिल जायेंगी जिनमें पति पत्नी के बच्चे नहीं होते और वे बच्चों के लिये बहुत परेशान रहते हैं। कभी कभी तो ऐसा भी होता है कि वे बच्चों की बस केवल इच्छा ही करते हैं और इच्छा करते ही उनकी इच्छा पूरी हो जाती है पर कभी कभी वे बच्चों के लिये इतने परेशान रहते हैं कि उनको पाने के लिये प्रार्थना करते हैं, मन्नत मॉगते हैं, साधु सन्यासी और डाक्टरों की सहायता लेते हैं और फिर भी जब कुछ नहीं हो पाता तो फिर किसी भी कीमत या शर्त पर उसको किसी से भी ले लेते हैं।

अगर वह उस बच्चे को किसी से शर्त पर लेते हैं तो अक्सर तो उनको वह कीमत चुकानी ही पड़ जाती है जिसमें उनको बहुत तकलीफ होती है पर कई बार वे बच्चे ही इतने होशियार होते हैं कि वे खुद ही उन शर्तों से बाहर निकल आते हैं।

इस पुस्तक में हमने ऐसी कुछ लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं जिनमें बच्चे या तो शर्तों पर पैदा हुए हैं या फिर उनको पाने के बाद किस तरह उनके माता पिता ने उनकी कीमत चुकायी है या फिर कैसे वे उनसे बाहर निकले हैं। या फिर वे किसी असामान्य तरीके से जन्मे हैं।

कभी कभी ये लोक कथाऐं सुन कर बड़ा अजीब सा लगता है कि ऐसी ऐसी शर्तों पर कोई बच्चा कैसे ले सकता है या फिर कैसे वे उतने असामान्य तरीके से जन्म ले सकते हैं पर इस सबसे यह जरूर पता चलता है कि पति पत्नी में यह इच्छा कितनी प्रबल होती है कि वे किसी भी कीमत पर अपना बच्चा लेने की इच्छा को पूरा करते हैं।

तो लो पढ़ो ये अजीबो गरीब लोक कथाऐं शर्तों पर बच्चे लेने की।

# 1 जादूगरनी का सिर[1]

शर्तों पर बच्चा लेने की यह पहली लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार इटली देश में एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। वह हमेशा भगवान से यही प्रार्थना करता रहता था कि वह उसको कोई बच्चा दे दे पर उसकी सारी प्रार्थनाऐं बेकार जा रही थीं।

एक दिन जब वह रोज की तरह से प्रार्थना करने गया तो उसने एक आवाज सुनी — "क्या तुमको एक लड़का चाहिये जो हो कर मर जाये या एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

यह सुन कर तो वह सोच ही नहीं सका कि वह इस बात का क्या जवाब दे सो वह चुप रह गया। वह घर गया और अपने सारे दरबारियों को बुलाया और उनसे पूछा कि उसको इस बात का क्या जवाब देना चाहिये। उसको क्या मॉगना चाहिये।

वे बोले — "अगर लड़के को मरना है तो यह तो वैसा ही है जैसे किसी बच्चे का न होना इसलिये आपको लड़की ही मॉगनी चाहिये।

[1] The Sorcerer's Head (Story No 84) – a folktale from Italy from its Upper Val d'Arno area. Adapted from the book : "Italian Folktales" by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

क्योंकि अगर वह भाग भी गयी तो भी वह कम से कम ज़िन्दा तो रहेगी और आप उसे कभी कभी देख तो सकेंगे। और फिर उसको हम ताले में बन्द करके भी रख सकते हैं ताकि वह कहीं भागे ही नहीं।"

सो राजा फिर से अपनी प्रार्थना की जगह वापस गया और प्रार्थना की। उसने फिर वही आवाज सुनी — "क्या तुमको एक लड़का चाहिये जो मर जाये या एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

इस बार उसने जवाब दिया — "मुझे एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

समय आने पर उसकी पत्नी ने एक सुन्दर बेटी को जन्म दिया। शहर से कई मील दूर एक बागीचा था जिसके बीच एक महल था। उसके भाग जाने के डर से वह अपनी बेटी को वहॉ ले गया और एक आया के साथ उसको वहॉ रख दिया।

राजा और रानी अक्सर उसको मिलने के लिये वहॉ चले जाते थे ताकि वह लड़की शहर के बारे में सोच ही न सके और वहॉ से भाग भी न सके।

जब राजकुमारी 16 साल की हो गयी तो राजा जिओना[2] का बेटा उधर की तरफ आ निकला। उसने राजकुमारी को देखा तो उसको उससे प्यार हो गया। उसने उसकी आया को रिश्वत में बहुत सारे पैसे दिये और उससे उस महल में घुसने की इजाज़त ले ली।

दोनों को एक दूसरे से प्रेम हो गया था सो दोनों ने खुशी खुशी शादी कर ली। दोनों की यह शादी दोनों के माता पिता को बिना पता चले ही हो गयी।

नौ महीने बाद राजकुमारी ने एक सुन्दर से बेटे को जन्म दिया। सो अगली बार जब राजा अपनी बेटी से मिलने आया तो पहले वह उसकी आया से मिला। उसने उससे पूछा कि उसकी बेटी कैसी थी।

आया बोली — "बहुत अच्छी है। क्या आप विश्वास करेंगे कि उसके अभी अभी बेटा हुआ है।"

यह सुन कर तो राजा ने उससे कोई भी रिश्ता रखने से मना कर दिया। इस तरह वह राजकुमारी अपने पति और बेटे के साथ उसी महल में अकेली रहती रही।

15 साल का हो जाने के बाद भी उसके बेटे ने अपने नाना को नहीं देखा था तो उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, मैं अपने नाना से मिलना चाहता हूँ।"

उसकी मॉ ने कहा — "हॉ हॉ बेटा क्यों नहीं। जाओ तुम उनके महल में जाओ और उनसे मिल लो।"

[2] King Giona

अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और एक घोड़े पर सवार हो कर और काफी सारा पैसा ले कर अपने नाना से मिलने चल दिया। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसके नाना ने उससे कोई प्यार दिखाना तो दूर बल्कि उसकी तरफ देखा भी नहीं और उससे बोला भी नहीं।

इतना खराब स्वागत देख कर वह लड़का **3–4** महीने बाद अपने नाना से बोला — "आप मुझसे इतने नाराज क्यों हैं नाना जी कि आप मुझसे बोलते भी नहीं हैं।"

राजा बोला — "जब तक तुम जंगल में रहने वाली जादूगरनी का सिर काट कर नहीं लाओगे तब तक मैं तुमसे नहीं बोलूँगा।"

राजकुमार बोला — "नाना जी, मैं केवल आपके लिये ही वहाँ जाऊँगा और उस जादूगरनी का सिर काट कर लाऊँगा।"

राजा बोला — "यही तो मैं भी चाहता हूँ कि तुम जाओ और उस जादूगरनी का सिर काट कर लाओ।"

"ठीक है।"

यह जादूगरनी एक ऐसी जादूगरनी थी कि जो कोई उसको देखता था वह पत्थर का हो जाता था और यह बात वह राजा जानता था कि उसके धेवते[3] के साथ भी यही होने वाला है यानी जैसे ही वह उसकी तरफ देखेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।

इसी लिये उसने उससे यह कहा भी था कि वह उस जादूगरनी का सिर काट कर लाये।

[3] Translated for the word "Grandson" – daughter's son or "son's son". Here it means daughter's son.

उस लड़के ने एक बहुत ही बढ़िया घोड़ा चुना, काफी सारा पैसा लिया और उस जादूगरनी का सिर लाने चल दिया।

रास्ते में उसको एक बूढ़ा मिला। उसने उस लड़के से पूछा — "मेरे बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जादूगरनी के पास, उसका सिर लाने।"

"ओह मेरे भगवान। उसके लिये तो तुमको एक ऐसा घोड़ा चाहिये जो उड़ सके। क्योंकि वहाँ पहुँचने के लिये तुमको एक पहाड़ के ऊपर से जाना पड़ेगा जिस पर बहुत सारे शेर चीते रहते हैं। अगर तुम वहाँ से इस घोड़े पर जाओगे तो वे तुमको और तुम्हारे घोड़े दोनों को खा जायेंगे।"

लड़का बोला — "पर ऐसा घोड़ा मुझे मिलेगा कहाँ से?"

बूढ़ा बोला — "रुको, मैं तुमको एक ऐसा घोड़ा ला कर देता हूँ जो उड़ सकता है।" इतना कह कर वह गायब हो गया और जब वह लौटा तो उसके साथ एक बहुत ही शानदार घोड़ा था।

वह बूढ़ा बोला — "अब तुम मेरी बात सुनो। तुम सीधे सीधे उस जादूगरनी को नहीं देख सकते क्योंकि अगर तुमने उसको सीधे देखा तो तुम पत्थर के हो जाओगे। तुमको उसे एक शीशे में देखना पड़ेगा। वह भी तुमको मैं बताता हूँ कि वह शीशा तुम्हें कैसे मिलेगा।

तुम यहाँ से इधर चले जाओ और थोड़ी दूर जाने के बाद तुमको एक संगमरमर का महल दिखायी देगा और एक बागीचा दिखायी देगा जिसमें खूबानी[4] के फूल वाले पेड़ लगे होंगे।

वहाँ तुमको दो अन्धी स्त्रियाँ मिलेंगी। उन दोनों स्त्रियों के पास केवल एक ही आँख है। वे दोनों उस एक आँख को आपस में बाँट कर इस्तेमाल करती हैं। उन्हीं स्त्रियों के पास वह शीशा है जो तुमको उस जादूगरनी को देखने के लिये चाहिये।

वह जादूगरनी अक्सर अपना समय एक घास के मैदान में गुजारती है जिसमें बहुत सारे फूल लगे हैं। उन फूलों की खुशबू ही तुम्हारे ऊपर जादू डालने के लिये काफी है सो उस खुशबू से जरा बच कर रहना और ध्यान रहे कि उस जादूगरनी को केवल शीशे में ही देखना नहीं तो तुम पत्थर के हो जाओगे।"

लड़के ने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसका उड़ने वाला घोड़ा ले कर चल दिया। वह उस पहाड़ के ऊपर से उड़ा जहाँ बहुत सारे शेर चीते और साँप रहते थे और जो उसको खाने के लिये तैयार थे।

वे उसको खाने के लिये दौड़े भी पर वह क्योंकि बहुत ऊँचा उड़ रहा था इसलिये वे उसका कुछ बिगाड़ नहीं सके। पहाड़ को

[4] Apricot flowers – see its picture above.

पीछे छोड़ता हुआ वह उड़ा जा रहा था, उड़ा जा रहा था कि दूर उसको एक संगमरमर का महल दिखायी दिया। उसने सोचा कि शायद यही उन अन्धी स्त्रियों का महल होगा।

इन दोनों अन्धी स्त्रियों के बीच में एक ही ऑख थी और इस ऑख को वे एक दूसरे को दे ले कर इस्तेमाल करती रहती थीं।

यह लड़का उस संगमरमर के महल के पास पहुँच तो गया पर महल का दरवाजा खटखटाने की हिम्मत नहीं कर सका सो वह बागीचे में ही टहलता रहा। वे स्त्रियॉ अपना शाम का खाना खा रही थीं। जब वे अपना खाना खा चुकीं तो वे भी बागीचे में टहलने के लिये आ गयीं।

उस समय वह एक पेड़ पर चढ़ गया ताकि वे स्त्रियॉ उसको देख न सकें। वे बातें करती हुई घूम रही थीं। जिस स्त्री के पास ऑख थी उसने ऊपर की तरफ मुँह उठा कर देखा और बोली — "तुमको यह महल देखना चाहिये जो राजा ने अभी नया नया बनवाया है।"

दूसरी बोली — "अच्छा? तो तुम मुझे ऑख दो तो मैं भी देखूँ।"

पहली वाली ने उसको ऑख दे दी। पर जैसे ही उसने हाथ बढ़ा कर ऑख देनी चाही तो लड़के ने पेड़ से नीचे झुक कर उसको बीच में ही ले लिया।

दूसरी बोली — "तो तुम मुझको ऑख नहीं देना चाहतीं। तुम सारा कुछ अपने आप ही देख लेना चाहती हो।"

"पर मैने तुमको ऑख दी तो।"

"नहीं, तुमने तो नहीं दी।"

"मैंने अभी तो तुम्हारे हाथ में रखी।"

वे इसी तरह आपस में बहस करती ही रहीं जब तक कि उनको यह पता नहीं चल गया कि उनमें से किसी की भी गलती नहीं थी और इस समय ऑख उन दोनों में से किसी के पास भी नहीं थी।

तब वे ज़ोर से बोलीं — "ऐसा लगता है कि हमारे बागीचे में कोई और है जिसने हमारी ऑख ले ली है। और अगर वह आदमी यहीं है तो मेहरबानी करके वह हमारी ऑख हमें दे दे क्योंकि हम दोनों के पास केवल एक ही ऑख है।

और अगर उसे हमसे हमारी ऑख के बदले में कुछ चाहिये तो वह हमको यह भी बता दे कि उसको हमसे क्या चाहिये हम अपनी ऑख के बदले उसको वह दे देंगे।"

तब वह लड़का पेड़ पर से नीचे उतर आया और बोला — "मेरे पास है आपकी ऑख। आप मुझे उसके बदले में वह शीशा दे दीजिये जिसमें मैं जादूगरनी को देख सकूँ क्योंकि मुझे जादूगरनी को मारना है।"

उन अन्धी स्त्रियों ने कहा — "खुशी से। पर पहले तुम हमारी ऑख तो वापस करो तभी तो हम वह शीशा तुमको ढूँढ कर दे सकेंगे।"

उस लड़के ने उनकी ऑख वापस कर दी। उनमें से एक स्त्री ने अपने ऑख लगायी और दोनों महल में चली गयीं। कुछ देर में ही वे एक शीशा ले कर वापस लौटीं।

उन्होंने वह शीशा उस लड़के को दे दिया और वह लड़का शीशा ले कर अपनी आगे की यात्रा पर चल दिया।

वह फिर चलता रहा, चलता रहा जब तक हवा में फूलों की खुशबू नहीं भर गयी। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया फूलों की खुशबू और तेज़ और और तेज़ होती चली गयी।

वह अब घास के मैदान में बने एक महल के पास पहुँच गया था। उस मैदान में फूल ही फूल लगे हुए थे वह जादूगरनी अपने घास के मैदान में घूम रही थी। उस लड़के ने अपना घोड़ा थोड़ा पीछे किया और उस जादूगरनी की तरफ पीठ करके उसको शीशे में देखा।

जादूगरनी को अपनी ताकत पर बहुत विश्वास था कि उसको देखते ही लोग पत्थर बन जायेंगे और अपनी इसी ताकत के भरोसे पर वह किसी से बच कर कहीं भागने की कोशिश भी नहीं करती थी और इसी लिये अभी भी वह कहीं गयी भी नहीं। वहीं बागीचे में ही घूमती रही।

उसको वहीं घूमते देख कर उसको शीशे में देखते हुए वह लड़का उसके पास तक चला आया और अपनी तलवार घुमा कर चलाते हुए उसका सिर काट लिया।

उसके सिर से थोड़ा सा खून निकला जो जमीन पर गिरते ही सॉपों में बदल गया। उस लड़के ने शीशे में देखते हुए ही वह सिर एक थैले में रखा और उड़ते घोड़े को धन्यवाद दे कर वह उसके ऊपर सवार हो कर तुरन्त ही वहॉ से उड़ चला।

घर लौटने के लिये उसने दूसरा रास्ता लिया। वह एक बन्दरगाह से गुजरा। समुद्र के पास ही एक चैपल[5] था। वह लड़का उस चैपल में चला गया तो वहॉ उसको एक सुन्दर सी लड़की काले कपड़े पहने रोती हुई दिखायी दी।

जैसे ही उसने उस लड़के को देखा तो चिल्लायी — "चले जाओ यहॉ से चले जाओ। यहॉ अगर ड्रैगन[6] आ गया तो वह तुमको खा जायेगा। वह रोज एक ज़िन्दा आदमी खाता है। आज क्योंकि मेरी बारी है इसलिये मैं यहॉ उसका इन्तजार कर रही हूॅ। पर तुम यहॉ से चले जाओ।"

[5] Chapel – small church. A chapel is a religious place of fellowship, prayer and worship that is attached to a larger, often nonreligious institution or that is considered an extension of a primary religious institution.

[6] Dragon – is a mythical winged serpent and depicted in various designa in various cultures. Above is its picture as depicted typically in Europe.

लड़के ने उसको धीरज बॅधाया — "देखो तुम घबराओ नहीं और रोओ भी नहीं। मैं तुमको उस ड्रैगन से बचाऊॅगा।"

लड़की रोते रोते बोली — "यह नामुमकिन है। उस जैसे ड्रैगन को मारना नामुमकिन है।"

लड़का फिर उसको तसल्ली देते हुए बोला — "तुम डरो नहीं और आओ मेरे घोड़े पर बैठ जाओ।" कह कर उस लड़के ने उस लड़की को अपने घोड़े पर बिठा लिया।

उसी समय पानी में छपाकों की आवाज सुनायी दी तो लड़के ने उस लड़की से अपनी ऑखें बन्द करने के लिये कहा और उसने खुद भी अपनी ऑखें बन्द करके थैले से जादूगरनी का सिर निकाल लिया।

जैसे ही ड्रैगन ने पानी में से अपना सिर बाहर निकाला तो उसको जादूगरनी का सिर दिखायी दिया। वह उसको देख कर तुरन्त ही पत्थर का हो गया और समुद्र की तली में डूब गया।

यह लड़की तो एक राजा की बेटी थी। सो इस लड़की को ड्रैगन से बचा कर वह लड़का उसको उसके माता पिता के पास ले गया। राजा और रानी दोनों ही अपनी बेटी को ज़िन्दा और सही सलामत देख कर बहुत खुश हुए।

इसके बदले में राजा ने अपनी बेटी की शादी उस लड़के से करने का वायदा किया और अगर वह उसके पास रहा तो उसको अपना वारिस बनाने का भी वायदा किया।

उस लड़के ने राजकुमारी को तो ले लिया पर उसके राज्य के लिये उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वह तो खुद ही अपने राज्य का राजा था और उसको वहॉ वापस लौटना था। राजकुमारी को ले कर वह अपने नाना के पास पहुँच गया।

राजा अपने धेवते को ज़िन्दा वापस आया देख कर आश्चर्यचकित भी हुआ और साथ ही कुछ दुखी भी हुआ।

लड़का बोला — "नाना जी, आप यही चाहते थे न कि मैं जाऊँ और जादूगरनी का सिर काट कर लाऊँ। सो देखिये मैं उसका सिर काट कर ले आया हूँ।"

इतना कह कर उसने अपनी ऑखें बन्द करके उस जादूगरनी का सिर थैले से निकाला और राजा के सामने कर दिया। जैसे ही राजा ने उसका सिर देखा वह पत्थर का हो गया।

उसके बाद वह लड़का अपने माता पिता के पास चला गया। वहॉ से उन सबको ले कर वह अपने नाना के राज्य में लौट आये और अपने नाना के बाद वह लड़का वहॉ का राजा बन गया।

उस राजकुमारी से उसकी शादी हो गयी और वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

# 2 खाल की बीमारी वाला आदमी[7]

शर्तों पर बच्चे लेने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। इसी दुख में वह एक दिन एक जंगल से गुजर रहा था कि उसको सफेद घोड़े पर सवार एक नाइट[8] दिखायी दे गया।

नाइट ने पूछा — "मैजेस्टी, आप इतने उदास क्यों हैं?"

राजा बोला — "मेरे कोई लड़का नहीं है जो मेरा राज्य सँभाल सके। तो मेरे मरने के बाद मेरा राज्य तो चला ही जायेगा।"

नाइट बोला — "अगर आपको लड़का चाहिये तो मेरे साथ एक समझौता कीजिये। जब आपका यह बेटा **15** साल का हो जायेगा तो आप इसको यहीं इसी जंगल में इसी जगह ले कर आयेंगे और उसको मुझे दे देंगे।"

राजा बोला — "मैं कोई भी समझौता करने के लिये तैयार हूँ पर बस मुझे एक बेटा चाहिये।"

---

[7] The Mangy One (Story No 110) – a folktale from Italy from its Abruzzo area.
Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[8] Knight – a knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

इस तरह राजा ने उस नाइट के साथ यह समझौता कर लिया कि जब उसका बेटा **15** साल का हो जायेगा तो वह उसको उसी जंगल में उसी जगह ले कर आयेगा और उस नाइट को दे देगा।

कुछ समय बाद राजा के घर एक बेटा पैदा हुआ।

उसका यह बेटा बहुत छोटा सा बच्चा था। उसके बाल सुनहरी थे और उसकी छाती पर एक सुनहरा क्रास बना हुआ था। दिन पर दिन वह बड़ा होता गया और उसकी अक्लमन्दी भी बढ़ती गयी।

**15** साल का होने से पहले ही उसने अपनी सारी पढ़ाई खत्म कर ली थी और वह हथियार चलाने में भी बहुत होशियार हो गया। पर उसकी **15**वीं सालगिरह से ठीक तीन दिन पहले ही राजा ने अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया और रोता रहा और रोता रहा।

रानी को यह पता ही नहीं था कि राजा क्यों रोये जा रहा था। जब राजा ने उसको अपने समझौते के बारे में बताया जो बस तीन दिन में पूरा होने वाला था तब वह भी रोने लगी।

जब लड़के ने अपने माता पिता को रोते देखा तो वह भी परेशान हो गया। उसके पूछने पर पिता ने कहा — "बेटे, मैं अब तुमको उसी जंगल में उसी जगह ले कर जाऊँगा और तुम्हें तुम्हारे

गौडफादर[9] को दे आऊँगा जिसने इस समझौते के अनुसार तुमको पैदा किया।"

अगले दिन पिता अपने बेटे को ले कर चुपचाप जंगल की तरफ चल दिया। तभी उनको दूसरे घोड़ों की टापों की आवाजें सुनायी दीं। यह उसी नाइट के सफेद घोड़ों की टापों की आवाजें थीं जिसको वह राजा अपने बेटे को देखने वाला था।

जब वह नाइट पास आ गया तो राजा का बेटा उस नाइट के बराबर बराबर चल दिया। पिता ने बिना कुछ कहे रोते रोते अपना घोड़ा पलट कर घुमाया और अपने घर की तरफ वापस चल दिया।

वह लड़का उस अजनबी नाइट के साथ साथ चलता रहा। वह जंगल के ऐसे हिस्सों से गुजर कर जा रहा था जहॉ से पहले वह कभी नहीं गया था। चलते चलते आखिर वे लोग एक बड़े महल के पास आ गये।

वहॉ आ कर वह नाइट उस लड़के से बोला — "गौडसन, अबसे तुम यहॉ रहोगे। तुम इस घर के मालिक हो पर मैं तुमको केवल तीन बातों के लिये मना करूँगा – एक तो यह छोटी खिड़की कभी मत खोलना। दूसरे यह आलमारी कभी मत खोलना। और तीसरे नीचे घुड़साल में कभी मत जाना।"

[9] Godfather - A godfather is a male godparent in many Christian traditions or a man arranged to be the legal guardian of a child in case the parents die before adulthood or the age of maturity.

आधी रात के समय वह गौडफादर अपने सफेद घोड़े पर सवार हुआ और चला गया फिर वह सुबह होने तक नहीं लौटा। तीन रात के बाद जब वह लड़का अकेला रह गया तो उसके मन में उत्सुकता जागी कि वह छोटी खिड़की खोल कर देखे कि उधर क्या है।

वह उस तरफ गया और उसने वह छोटी खिड़की खोली। उसके सामने वहॉ धुँआ और आग की लपटें दिखायी दे रही थीं। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि वह खिड़की नरक की तरफ खुलती थी। उस लड़के ने नरक की तरफ देखा कि शायद वह वहॉ किसी को पहचान सके।

ध्यान से देखने पर जानते हो उसको वहॉ कौन दिखायी दिया? वहॉ तो उसकी दादी थी। दादी ने भी अपने पोते को देखा तो वह नरक की गहराइयों से चिल्लायी — "ओ मेरे पोते, तुझे यहॉ कौन लाया है?"

लड़का बोला — "मेरा गौडफादर।"

"नहीं नहीं मेरे पोते। वह आदमी तेरा गौडफादर नहीं है। वह तो एक शैतान है। तू अपनी जान बचा कर भाग ले। आलमारी खोल और उसमें से एक चलनी ले, एक साबुन की टिक्की ले और एक कंघी ले।

फिर नीचे घुड़साल में जा। वहॉ तुझे तेरा अपना घोड़ा मिल जायेगा। उस पर सवार हो कर भाग जा। अगर तेरे पीछे वह शैतान आये तो ये तीनों चीज़ें एक एक करके उसके रास्ते में फेंक

देना। उसके बाद जोरडन नदी[10] आयेगी उसको पार करते ही तू उस शैतान के चंगुल से छूट जायेगा।"

यह सुन कर उस लड़के ने पहले आलमारी से एक चलनी, एक साबुन की टिक्की और एक कंघी निकाली फिर नीचे घुड़साल में गया, अपना घोड़ा ढूँढा और उस पर चढ़ कर वहाँ से भाग लिया। उसके घोड़े का नाम हौसरैडिश[11] था।

जब वह गौडफादर वापस आया तो उसने देखा कि उसका गौडसन तो वहाँ से जा चुका था और साथ में वह अपना घोड़ा भी ले गया था। फिर उसने देखा कि वह तो उसकी आलमारी में से उसका कुछ सामान भी ले गया था।

उसने बहुत सारी आत्माओं को जलते हुए कोयलों पर लुढ़काया और फिर वह भी उस भगोड़े के पीछे पीछे चल दिया।

उस नाइट का सफेद घोड़ा कुलाचें मारता हुआ दौड़ता चला जा रहा था। उसका अपना घोड़ा उस लड़के के हौसरैडिश घोड़े से भी सौ गुना तेज़ भाग रहा था और वह उसको जल्दी ही पकड़ भी लेता पर उसके गौडसन ने उसके और अपने बीच के रास्ते में कंघी फेंक दी।

उस कंघी ने जमीन पर गिरते ही रास्ते में एक बहुत बड़ा और घना जंगल पैदा कर दिया। गौडफादर को उसे पार करने में बहुत

[10] Jordon River

[11] Horseradish – name of the Prince's horse

मुश्किल हुई इसके अलावा उसको पार करते करते उसको देर भी बहुत लग गयी।

आखिर जब वह जंगल से बाहर निकला तो उसको अपना गौडसन फिर से दिखायी पड़ा। गौडसन ने उसको अपने पीछे आते देखा तो अबकी बार उसने चलनी फेंक दी। उस चलनी ने जमीन पर गिरते ही दलदल का एक बहुत बड़ा मैदान बना दिया। गौडफादर को इस मैदान को पार करने में भी बहुत परेशानी हुई और देर लग गयी।

किसी तरह से वह यहॉ से निकला तो फिर उसने अपने गौडसन को पकड़ा। अबकी बार उस लड़के ने साबुन की टिक्की फेंक दी। उस साबुन की टिक्की ने जमीन पर गिरते ही फिसलने वाले पहाड़ पैदा कर दिये। अब गौडफादर का घोड़ा जहॉ भी अपना पैर रखता वह वहॉ से बहुत नीचे तक फिसल जाता।

इस बीच वह लड़का जोरडन नदी तक आ पहुॅचा था सो उसने अपने घोड़े को नदी के पानी में डाल दिया। घोड़ा तुरन्त ही नदी पार करके उसके दूसरी पार पहुॅच गया।

इस समय तक गौडफादर केवल पहाड़ पर चढ़ना शुरू ही कर रहा था। उस लड़के को न पकड़ पाने की वजह से वह बहुत गुस्सा था। और अब जोरडन नदी के पार तो वह जा भी नहीं सकता था। सो उसने खूब बिजली चमकायी, तेज़ हवा चलायी, तेज़ बारिश बरसायी, खूब ओले बरसाये।

पर वह लड़का क्योंकि जोरडन नदी पार कर चुका था इसलिये उसके इन सब जादुओं ने उसके ऊपर कोई असर नहीं किया। अब वह लड़का पुर्तगाल के राजा के शहर में पहुँच गया था।

## राजकुमार की शादी

पुर्तगाल पहुँच कर वह पहचाना न जा सके इसलिये उसने अपने सुनहरी बाल छिपाने के लिये एक कसाई से एक बैल का ब्लैडर[12] खरीद लिया और उसको अपने सिर पर लगा लिया। इससे वह ऐसा लगने लगा जैसे उसके सिर पर कोई खाल की बीमारी हो गयी हो।

वहाँ पहुँच कर उसने हौसरैडिश को एक घास के मैदान में चरने के लिये छोड़ दिया। उस घोड़े को अब कोई चुरा भी नहीं सकता था क्योंकि उस शैतान की घुड़साल में रहते रहते अब उसने आदमी खाना सीख लिया था।

बैल का ब्लैडर सिर पर ओढ़े ओढ़े वह लड़का पुर्तगाल के राजा के महल के आस पास घूम रहा था कि राजा के माली ने उसको देखा। उसने उस लड़के से बात की तो उसको पता चला कि वह कोई काम ढूँढ रहा था। उसने उस लड़के को अपनी सहायता के लिये रख लिया।

[12] Bladder is a part of the body in which urine is collected.

माली जब उसको घर ले कर आया तो उसको देख कर माली की पत्नी बहुत नाराज हुई क्योंकि वह ऐसे किसी भी आदमी को अपने घर में नहीं चाहती थी जिसको खाल का रोग हो रहा हो।

अपनी पत्नी को खुश करने के लिये उसने उस लड़के को पास के एक जंगल में रहने भेज दिया और उसने उस लड़के से कह दिया कि अब वह वहीं रहे क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि वह उसके घर में फिर से कदम रखे। सो वह लड़का जंगल में रहने चला गया।

रात को वह लड़का दबे पॉव अपनी झोंपड़ी में से निकला, अपने हौसरैडिश को खोला, एक राजा के बेटे की तरह अपना लाल सूट पहना और अपने सिर से बैल के ब्लैडर को हटा दिया। ब्लैडर को हटाते ही उसके सुनहरी बाल चॉदनी में चमक उठे।

वह फिर शाही बागीचे में चला गया और वहॉ जा कर घूमता रहा और कुछ कुछ करता रहा – जैसे वह वे तीन छल्ले हवा में घुमाता रहा जो उसकी मॉ ने उसे दिये थे।

उन तीनों छल्लों को वह अपनी तीनों बीच वाली उॅगलियों में पहने रहता था। कभी वह उन छल्लों को हवा में उछाल कर अपनी तलवार की नोक पर टिका लेता था और कभी उनको ऐसे ही उछालता रहता।

इसी समय इत्तफाक से पुर्तगाल के राजा की बेटी अपनी खिड़की पर आ कर खड़ी हुई और चॉदनी रात में अपने बागीचे को

देखने लगी। उसकी निगाह उस लड़के पर भी पड़ी – वह सुन्दर सुनहरे बालों वाला लाल पोशाक पहने लड़का जो ये सब करामातें कर रहा था।

उसने सोचा कि यह लड़का कौन हो सकता है? यह इस बागीचे में कैसे आया? मैं देखती हूँ कि यह कहाँ कहाँ जाता है? सो वह तब तक उसको देखती रही जब तक वह वहाँ से चल नहीं दिया।

जब वह वहाँ से चला तो सुबह होने वाली थी। वह बागीचे के उस दरवाजे से बाहर निकला जो घास के मैदान में जाने के लिये खुलता था। बाहर निकल कर उसने अपने घोड़े को घास चरायी और गायब हो गया।

राजकुमारी की आँखें अभी भी उसका पीछा नहीं छोड़ रही थीं और बागीचे के दरवाजे पर ही लगी हुई थीं।

थोड़ी देर बाद उसने देखा कि वह खाल की बीमारी वाला लड़का जो माली की सहायता कर रहा था उसी दरवाजे से अन्दर चला आ रहा था। उसने अपनी खिड़की बन्द कर दी ताकि वह लड़का उसको न देख सके।

अगली रात राजकुमारी फिर अपनी खिडकी पर आ कर बैठ गयी और उस लड़के का इन्तजार करने लगी। आखिर उसने उस खाल की बीमारी वाले लड़के को जंगल में बनी झोंपड़ी से बाहर निकलते और फिर बागीचे के दरवाजे की तरफ आते देखा।

पर फिर कुछ मिनटों बाद ही उसने उस सुनहरे बालों वाले सवार को शाही बागीचे में उसी दरवाजे से अन्दर आते देखा। आज वह सफेद कपड़े पहने था।

आ कर उसने फिर अपनी करामातें शुरू कर दीं। और पिछली रात की तरह से आज भी वह सुबह होने से पहले ही वहॉ से चला गया।

पर कुछ मिनटों में ही वह खाल की बीमारी वाला लड़का वहॉ आ गया। राजकुमारी को शक हुआ कि जरूर ही इस खाल की बीमारी वाले लड़के में और उस सुनहरी बालों वाले लड़के में आपस में कुछ रिश्ता है।

तीसरी रात फिर ऐसा ही हुआ, सिवाय इसके कि आज वह सवार काले कपड़े पहन कर आया था। राजकुमारी को लगा कि यह खाल की बीमारी वाला लड़का और यह सवार दोनों एक ही हैं।

अगले दिन राजकुमारी खाल की बीमारी वाले लड़के के पास बागीचे में गयी और उससे कुछ फूल लाने के लिये कहा। लड़के ने फूलों के तीन गुच्छे बनाये – एक बड़ा, एक बीच का और एक छोटा। उसने उन तीनों गुच्छों को एक टोकरी में रखा और राजकुमारी की तरफ चला।

सबसे बड़ा वाला फूलों का गुच्छा तो राजकुमार की बीच वाली उॅगली के छल्ले में रखा था और छोटा वाला उसकी सबसे छोटी

वाली उँगली के छल्ले में लगा था और बीच वाला गुच्छा उसकी अँगूठी वाली उँगली के छल्ले में लगा हुआ था।

जब उसने ये तीनों गुच्छे राजकुमारी को दिये तो राजकुमारी ने ने वे तीनों छल्ले तुरन्त पहचान लिये। ये वे ही छल्ले थे जिनको रात में वह सूट वाला लड़का उछाल उछाल कर खेल रहा था। उस ने उस खाल की बीमारी वाले लड़के की टोकरी को सोने के डबलून[13] से भर दिया।

अगले दिन राजकुमारी ने खाल की बीमारी वाले लड़के से सन्तरे लाने के लिये कहा तो वह उसके लिये तीन सन्तरे लाया – एक पका हुआ, एक आधा पका और एक कच्चा।

राजकुमारी ने उन तीनों को मेज पर रखा तो राजा ने पूछा — "तुम यह कच्चा सन्तरा मेज पर क्यों रख रही हो?"

राजकुमारी बोली — "वह खाल की बीमारी वाला लड़का यही ले कर आया था।"

राजा बोला उसको अन्दर बुलाओ देखते हैं वह इसके बारे में क्या कहता है। सो उस खाल की बीमारी वाले लड़के को वहाँ बुलाया गया। जब वह वहाँ आया तो राजा ने उससे पूछा — "तुमने ये तीन तरह के सन्तरे क्यों तोड़े?"

[13] Doubloon means "double". Means 2 or 32 real gold coins 6.77 gms each. Doubloons were minted in Spain, Mexico, Peru and New Granada.

वह लड़का बोला — "मैजेस्टी, आपके तीन बेटियॉ हैं। एक शादी के लायक है, दूसरी शादी के लिये अभी थोड़ी दूर है जबकि तीसरी की शादी को तो कई साल हैं।"

राजा बोला — "बिल्कुल ठीक।"

और फिर उसने यह मुनादी पिटवा दी — "जो भी मेरी सबसे बड़ी बेटी से शादी करना चाहता है वह यहॉ आये और फिर जिसको भी मेरी बेटी अपना रूमाल दे देगी वही उसका पति होगा।"

सो शाही खिड़की के नीचे राजाओं और राजकुमारों की एक बहुत बड़ी लाइन लग गयी। पहले राजाओं के परिवार के लोग आये, फिर और दूसरे बड़े बड़े ओहदे वाले आये, फिर नाइट्स आये, फिर घुड़सवार और फिर पैदल आये।

और सबसे बाद में आया माली की सहायता करने वाला वह खाल की बीमारी वाला लड़का। राजकुमारी ने अपना रूमाल उसको दे दिया।

यह देख कर कि उसकी बेटी ने एक खाल की बीमारी वाले लड़के को चुन लिया है राजा ने अपनी बेटी को घर से निकाल दिया। राजकुमारी उस लड़के साथ रहने के लिये उसकी झोंपड़ी में चली गयी।

लड़के ने सोने के लिये उसको अपना पलंग दे दिया और अपने सोने के लिये एक काउच आग के पास रख दिया। उसने राजकुमारी

से कहा कि एक खाल की बीमारी वाला तो राजा की बेटी के पास आने की भी हिम्मत नहीं कर सकता था।

राजकुमारी ने जब यह सुना तो उसको लगा कि कहीं इस लड़के को सचमुच ही खाल की बीमारी न हो। ओह मेरे भगवान, यह मैंने क्या किया। कहीं मुझसे वाकई गलती न हो गयी हो। और वह अपने चुनाव पर पछताने लगी।

## राजकुमार की पोल खुली

इसी समय पुर्तगाल और स्पेन के राजाओं में लड़ाई छिड़ गयी और सारे आदमी लोग लड़ाई में लग गये। जबसे राजकुमारी ने उस खाल की बीमारी वाले लड़के से शादी की थी तबसे बहुत सारे लोग उससे नाराज थे और जल रहे थे।

उन्होंने उस खाल की बीमारी वाली लड़के से कहा — "सारे आदमी लोग तो लड़ाई पर जा रहे हैं पर तुमने क्योंकि राजा की बेटी से शादी की है इसी लिये तुम यहाँ ठहर रहे हो।"

पर फिर भी उन्होंने उसको पहले से ही एक लंगड़ा घोड़ा देने का प्लान बना रखा था ताकि वह लड़का लड़ाई में मारा जाये। खाल की बीमारी वाले लड़के ने उनका दिया हुआ लंगड़ा घोड़ा लिया और मैदान की तरफ चला जहाँ उसका अपना घोड़ा हौसरैडिश घास चर रहा था।

वह फिर अपनी लाल पोशाक पहन कर तैयार हुआ, अपनी छाती पर एक प्लेट लगायी जो उसके पिता ने उसको दी थी और अपने हौसरैडिश घोड़े पर सवार हो कर लड़ाई के मैदान में चल दिया।

एक समय पर पुर्तगाल के राजा को स्पेन के सिपाहियों ने घेर लिया तो पुर्तगाल के सिपाहियों ने देखा कि लाल पोशाक पहने एक नाइट उनके राजा की रक्षा करने के लिये आ गया और उसने दुश्मनों के सिपाहियों को भगा कर उनके राजा की जान बचा ली।

इसके बाद दुश्मन का कोई भी सिपाही पुर्तगाल के राजा के पास आने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था क्योंकि उस लाल पोशाक वाले की तलवार बॉये और दॉये दोनों तरफ से खूब तेज़ चल रही थी।

उधर उसके घोड़े को देख कर दुश्मनों के घोड़े भी डर रहे थे तो वे भी उसके घोड़े के पास आने की कोशिश नहीं कर पा रहे थे। इस तरह लड़ाई का पहला दिन खत्म हुआ।

राजकुमारी लड़ाई की खबर सुनने के लिये शाम को महल गयी। वहॉ जब उसने सुना कि एक सुनहरी बालों वाला लड़का जो लाल पोशाक पहने था बहुत बहादुरी से लड़ा और उसने उसके पिता जी की जान बचायी।

और उसी की वजह से पुर्तगाल जीत गया तो वह यह सोचे बिना न रह सकी कि यह तो मेरा ही नाइट है। वही घुड़सवार जिसको मैं रात को अपने बागीचे में देखती थी और उफ़, अब मैंने

एक खाल की बीमारी वाले को अपन पति चुन लिया है यह मैंने क्या किया है। यह सोच कर वह उदास सी अपनी झोंपड़ी में लौट आयी।

झोंपड़ी में आ कर उसने देखा कि उसका खाल की रोग वाला लड़का तो आग के पास वाले काउच पर पड़ा सो रहा है। उसने अपना वही पुराना शाल ओढ़ रखा था। उसको देख कर राजकुमारी रो पड़ी।

सुबह को उस खाल की बीमारी वाले लड़के ने फिर से अपना लॅगड़ा घोड़ा उठाया और लड़ाई के मैदान की तरफ चल दिया। पर पहले दिन की तरह से पहले वह घास के मैदान में गया।

वहॉ पहले उसने अपना लंगड़ा घोड़ा अपने हौसरैडिश से बदला। फिर अपना सफेद सूट पहना, उसके ऊपर अपनी छाती पर प्लेट लगायी। अपने सुनहरे बालों वाले सिर पर से बैल का ब्लैडर हटाया और लड़ाई के मैदान की तरफ चल दिया।

और उस दिन भी पुर्तगाल जीत गया।

तीसरे दिन वह सुनहरे बालों वाला नाइट अपनी काली पोशाक में गया। इस बार स्पेन का राजा खुद लड़ाई के मैदान में आया हुआ था अपने सात बेटों के साथ। सो वह सुनहरी बालों वाला नाइट उन सातों लड़कों के साथ एक साथ लड़ा।

उसने उन सबके साथ एक साथ लड़ाई लड़ी और सबको मार दिया पर सातवें बेटे ने मरने से पहले उसकी दॉयी बॉह को अपनी तलवार से जख्मी कर दिया।

लड़ाई खत्म हो जाने के बाद राजा उसके घाव की मरहम पट्टी करवाना चाहता था पर दूसरी शामों की तरह इस शाम भी वह वहॉ से गायब हो गया।

यह सुन कर कि वह सुनहरी बालों वाला नाइट जख्मी हो गया है राजा की बेटी को बहुत दुख हुआ क्योंकि वह अभी भी उस अजनबी से बहुत प्यार करती थी।

वह उस खाल की बीमारी वाले लड़के के लिये बुरा सोचते हुए घर गयी जहॉ वह रोज की तरह से अपना पुराना शाल ओढ़े आग के पास पड़े काउच पर सो रहा था।

पर जब वह उसकी तरफ देख रही थी तो उसको उसके शाल के नीचे की तरफ उसकी बॉह पर एक पट्टी बॅधी दिखायी दी। फिर उसने देखा तो शाल के नीचे वह एक कीमती काली पोशाक पहने था।

उसने यही नहीं देखा बल्कि उसने उसके बैल के ब्लैडर के नीचे उसके सुनहरी बाल भी देखे। क्योंकि वह लड़का उस दिन बहुत थका हुआ था और जख्मी था सो वह अपने कपड़े भी नहीं बदल पाया था और ऐसे ही आ कर काउच पर लेट गया था। लेटते ही उसको नींद आ गयी।

यह देख कर राजा की बेटी की तो खुशी और आश्चर्य से चीख निकलते निकलते रह गयी। वह दबे पॉव झोंपड़ी से बाहर निकली ताकि वह लड़का जाग न जाये और दौड़ती हुई अपने पिता के पास पहुँची और बोली — "पिता जी, ज़रा आ कर देखिये तो कि आप को लड़ाई में किसने जिताया। आइये देखिये।"

राजा और उसका सारा दरबार राजकुमारी के पीछे पीछे उसकी झोंपड़ी तक आया और उस लड़के को देखा। सबके मुँह से निकला — "अरे यह तो वही लड़का है।" राजा ने उस नाइट को उसके नकली वेश में भी पहचान लिया।

उन्होंने उसको जगाया और उसको अपने कन्धों पर ले गये होते पर राजा की बेटी ने चीरा लगाने वाले डाक्टर को वहीं बुला लिया और उसके घाव की मरहम पट्टी वहीं करवा दी।

राजा तो उनकी शादी वहीं और उसी समय करना चाहता था पर लड़के ने कहा — "अभी नहीं। पहले मुझे अपने माता पिता को बताना है कि क्योंकि मैं भी एक राजा का बेटा हूँ।" सो उस राजा ने वैसा ही किया।

उस लड़के के माता पिता ने तो यह सोच लिया था कि उनका बेटा मर गया पर वे अपने बेटे को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए और फिर सब लोग खुशी खुशी शादी की दावत में शामिल हुए। उन दोनों की शादी खूब धूमधाम से मनायी गयी।

# 3 ग्वालिन रानी[14]

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। एक बुढ़िया ने उनको बताया कि उनके या तो एक लड़का होगा जो घर छोड़ कर चला जायेगा और वे उसको कभी नहीं देख पायेंगे।

और या फिर वह एक बेटी ले लें जिसको वे 18 साल की उम्र तक रख पायेंगे – वह भी जब जबकि वे उस पर ठीक से नजर रख पाये तो। राजा और रानी ने कहा कि वे बेटी से ही सन्तुष्ट थे।

समय आने पर उनके घर एक बेटी हुई। राजा ने उसके लिये जमीन के नीचे एक बहुत ही सुन्दर महल बनवाया और वह उसी में रहने, पलने और बढ़ने लगी। उस लड़की को इस बात का ज़रा सा भी पता नहीं था कि जमीन के ऊपर भी कुछ है।

जब वह 18 साल की होने को आयी तो उसने अपनी आया से प्रार्थना की कि वह उस महल का दरवाजा खोल दे। हालॉकि आया ने उसको दरवाजा खोलने के लिये काफी मना किया पर वह उससे जिद करती रही तो आखिर आया ने उसके लिये महल का दरवाजा खोल दिया।

लड़की दरवाजे से बाहर निकली तो अपने आप को एक बागीचे में पाया। सूरज देख कर उसको बहुत अच्छा लगा। उसने सूरज

[14] The Milkmaid Queen (Story No 81) – a folktale from Legborn area, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

पहली बार देखा था। आसमान के बहुत सारे रंग पहली बार देखे थे। फूल और बड़े बड़े पंखों वाली चिड़ियें पहली बार देखी थीं कि वे कैसे नीचे उड़ उड़ कर आ रही थीं।

इतने में एक बड़े पंजे वाली चिड़िया आयी और उसको अपने पंजों में दबा कर उड़ा कर ले गयी। वह चिड़िया उड़ती गयी और उड़ती गयी और जा कर खेत मे बने एक मकान पर बैठ गयी।

उसने उस लड़की को उस घर की छत पर ले जा कर छोड़ दिया और उड़ गयी। उस समय दो किसान, एक पिता और एक उसका बेटा, उस खेत में काम कर रहे थे। उन्होंने देखा कि उनके मकान के ऊपर कोई चमकीली सी चीज़ बैठी है।

सो उन्होंने एक सीढ़ी उठायी और छत पर चढ़ गये। वहॉ पहुँच कर उन्होंने देखा कि वहॉ तो एक सुन्दर सी लड़की चमकीले हीरों का ताज पहने खड़ी है।

उस किसान का यही एक बेटा था जो उसके साथ काम कर रहा था और पॉच बेटियॉ थीं। उसकी पॉचों बेटियॉ ग्वालिनें थीं। उस किसान ने उस लड़की को अपनी उन पॉचों बेटियों के साथ ही रख लिया और सब साथ साथ ही रहने लगे।

वह किसान हर महीने उस लड़की के ताज का एक हीरा बेच देता और उससे आये पैसों से परिवार का खर्च चलाता था।

जब लड़की के ताज के सब हीरे बिक गये तो लड़की किसान की पत्नी से बोली — "मैं आप लोगों से दूर नहीं रहना चाहती मॉ। आप इस देश के राजा के पास जायें और उनसे कहें कि वह आपको कढ़ाई करने के लिये कुछ दे दें।"

सो किसान की पत्नी उस देश के राजा के पास गयी और कढ़ाई के लिये कुछ मॉगा तो रानी बोली — "तुम अपनी ग्वालिन बेटियों से यह उम्मीद कैसे रखती हो कि वह कुछ कढ़ाई कर लेंगी?"

फिर भी रानी ने चतुराई से कढ़ाई करने के लिये उसको एक कैनवैस[15] दे दिया। किसान की पत्नी उस कैनवैस को ले कर घर आ गयी और उस कैनवैस को उसने उस लड़की को दे दिया। लड़की ने उस कैनवैस पर इतनी सुन्दर कढ़ाई की कि उसको देख कर तो रानी की बोलती ही बन्द हो गयी।

रानी ने किसान की पत्नी को दो सोने के सिक्के और एक साफ करने वाला कपड़ा[16] दिया जो उस लड़की को काढ़ना था। कुछ दिन बाद किसान की पत्नी कढ़ाई किये गये सफाई करने वाले कपड़े को

[15] Translated for the word "Canvas" – canvas is a type of thick coarse cloth
[16] Translated for the word "Dusting cloth"

ले कर रानी के पास गयी तो रानी ने देखा कि वह कपड़ा तो बहुत ही सुन्दर कढ़ा हुआ था।

इस बार रानी ने उसको तीन सोने के सिक्के दिये और काढ़ने के लिये एक पुरानी फटी हुई स्कर्ट दे दी। जब वह स्कर्ट रानी को वापस दी गयी तो वह तो शाम को पहने जाने वाली पोशाक का ही एक हिस्सा लग रही थी।[17]

अबकी बार रानी से नहीं रहा गया। उसने उस किसान की पत्नी से पूछा — "तुम्हारी बेटी ने इतनी सुन्दर कढ़ाई करनी सीखी कहॉ?"

किसान की पत्नी ने जवाब दिया — "एक नन[18] ने उसे यह सब सिखाया था।"

रानी बोली — "हो सकता है पर फिर भी यह किसी देहातिन का काम नहीं है। खैर कोई बात नहीं। मैं चाहूँगी कि वह मेरे बेटे की शादी की सारी पोशाकों पर कढ़ाई करे।"

यह सुन कर कि एक ग्वालिन उसकी शादी की पोशाकें काढ़ रही थी राजकुमार ने

[17] It was looking so nice that it looked like a part of the eveniong dress. Evening dress is supposed to be a good dress in western world.

[18] A nun is a member of a religious community of women, living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent. The term "nun" or "Sister" is applicable to both Eastern and Western Catholics, Orthodox Christians, Anglicans, Lutherans, Jains, Buddhists, Taoists, Hindus and some other religious traditions – see a picture of nun above.

उस ग्वालिन से मिलने और उसको कढ़ाई करते देखने की इच्छा प्रगट की।

वह एक शरारती नौजवान था सो उसकी यह इच्छा ज़ोर पकड़ गयी। एक दिन वह अचानक उसके घर पहुँच गया और उसने पीछे से जा कर उसको चूम लिया।

इस पर उस लड़की की कढ़ाई करने वाली सुई उस राजकुमार की छाती में चुभ गयी और दिल तक जा पहुँची जिससे वह मर गया।

यह देख कर लड़की तो सन्न रह गयी पर इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। उसको पकड़ कर राजा की अदालत में ले जाया गया। उस अदालत में राजा की चार लड़कियाँ जज के रूप में थीं।

राजा की सबसे बड़ी लड़की ने इस लड़की के लिये मौत की सजा सुनायी। दूसरी लड़की ने उसको ज़िन्दगी भर के लिये जेल में डालने की सजा दी। तीसरी लड़की ने उसको **20** साल जेल में रहने की सजा सुनायी।

पर चौथी लड़की जो राजा की सबसे छोटी लड़की थी और जो सबसे ज़्यादा दयालु थी समझ गयी कि यह मौत तो उसका भाई अपने लिये अपने आप ही ले कर आया था। उसको मारने में इस लड़की का कोई हाथ नहीं है।

उसने उस लड़की के लिये एक मीनार में **8** साल के लिये बन्द करने की सलाह दी। और साथ में उसने यह भी कहा कि राजकुमार

का शरीर हमेशा उसके सामने रखा रहना चाहिये ताकि वह उसको देख देख कर पछताती रहे।

सबसे छोटी लड़की की बात मान ली गयी और उस ग्वालिन लड़की को एक मीनार में बन्द कर दिया गया। जब वह मीनार की तरफ ले जायी जा रही थी तो राजा की सबसे छोटी लड़की जिसने उसको यह सजा दी थी उसके कान में फुसफुसायी — "तुम डरना नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

राजा की बेटी अपनी बात की सच्ची थी। वह उस ग्वालिन कैदी को खाने के लिये रोज शाही रसोई के बढ़िया बढ़िया पकवान भेजती रही।

जब उस ग्वालिन को मीनार में कैद हुए तीन साल हो गये तो मीनार के पास एक दिन फिर से वही बड़े पंखों वाली चिड़िया प्रगट हुई जो उस लड़की को उसके जमीन के अन्दर वाले महल से उठा कर लायी थी। उसने मीनार की चोटी पर एक घोंसला बनाया और वहाँ **10** अंडे दिये। उन **10** अंडों में से **10** बच्चे निकले।

वह कैदी ग्वालिन उस चिड़िया से रोज कहती — "चिड़िया ओ चिड़िया, जैसे तुम मुझे मेरे घर से बाहर निकाल कर लायी थीं उसी तरह तुम मुझे यहाँ से भी बाहर निकालो।"

मीनार के पास ही एक और महल था जिसमें राजा की तीनों बड़ी वाली लड़कियाँ रहती थीं। एक दिन जब वे खिड़की पर खड़ी

थीं तो उन्होंने उस ग्वालिन के शब्द सुन लिये और राजा को जा कर उनको बता दिया।

राजा ने हुकुम दिया कि उस चिड़िया और उसके बच्चों को उस मीनार से नीचे फेंक दिया जाये ताकि वे सब जमीन पर गिरते ही मर जायें। चौकीदारों ने उस चिड़िया का घोंसला उसके बच्चों के साथ साथ उस मीनार से नीचे फेंक दिया। नीचे गिरते ही उस चिड़िया के सारे बच्चे मर गये।

उसी शाम उस ग्वालिन ने उस बड़ी चिड़िया को अपने मरे हुए बच्चों के ऊपर उड़ते हुए देखा। उसकी चोंच मे एक खास किस्म की घास का गुच्छा था। उसने उस घास के गुच्छे को उन मरे हुए बच्चों के ऊपर फेरा और उसके सब बच्चे ज़िन्दा हो गये।

यह देख कर ग्वालिन को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उस चिड़िया से बोली — "मुझे भी थोड़ी सी यह जादू की घास ला दो न।"

यह सुन कर वह चिड़िया वहॉ से उड़ गयी और अपने पंखों में वैसी ही थोड़ी सी घास ले कर वापस आ गयी। उस लड़की ने वह घास उससे ले ली और राजकुमार के शरीर को उस घास से सहलाया। धीरे धीरे राजकुमार ज़िन्दा हो गया।

यह कहना मुश्किल है कि उन दोनों में से कौन ज़्यादा खुश था, ग्वालिन या राजकुमार। पर ग्वालिन ने उसको गले से लगा लिया और वे काफी देर तक एक दूसरे से हॅस हॅस कर बातें करते रहे।

हालॉकि उन्होंने यह खुशी की खबर किसी को नहीं बतायी पर फिर भी राजा की सबसे छोटी बेटी को यह पता चल गया कि उसका भाई ज़िन्दा हो गया है और उसने उस दिन वहॉ बहुत सारे स्वादिष्ट खाने भिजवाये और फिर वह वहॉ रोज रोज वैसे ही खाने भेजती रही।

उसके भाई ने अपनी बहिन को एक गिटार भी भिजवाने के लिये कहा तो उसने उसको एक गिटार भी भिजवा दिया।

अब क्या था ग्वालिन और राजकुमार उस मीनार के ऊपरी हिस्से में गा बजा कर अपने दिन गुज़ारने लगे। पास वाले महल में से जिसमें वे तीन लड़कियॉ रहती थीं उस मीनार से गाने और गिटार बजाने की आवाज सुनी तो उन्होंने सोचा कि वे वहॉ जा कर देखें कि वहॉ क्या हो रहा है।

पर जब वे तीनों लड़कियॉ वहा पहुॅची तो देखा कि राजकुमार अपने ताबूत में पहले की तरह से लेटा हुआ था और वह लड़की भी दुखी सी बैठी थी सो वे तीनों बहिनें बेवकूफों की तरह से अपना सा मुॅह ले कर वहॉ से वापस लौट आयीं। पर उस रात उन्होंने मीनार से आती गाने बजाने की आवाज फिर से सुनी।

वे अपने पिता राजा के पीछे पड़ी रहीं कि उस मीनार में कुछ गड़बड़ हो रही थी इसलिये उस लड़की को किसी दूसरी जगह

भिजवा दिया जाये। और उस ग्वालिन को उन्होंने एक दूसरी जेल में भिजवा ही दिया।

जब चौकीदार उसको लेने के लिये वहॉ गये तो उन्होंने देखा कि वह लड़की तो राजकुमार की बॉहों में बॉहें डाल कर बैठी हुई है। यह बात चौकीदारों ने जा कर राजा से कही तो राजा, रानी और उनकी चारों बेटियॉ वहॉ राजकुमार को ज़िन्दा देखने के लिये आये।

उन्होंने देखा कि राजकुमार तो सचमुच ज़िन्दा था और तन्दुरुस्त था। यह देख कर तो सारे शाही परिवार की बोलती बन्द हो गयी। राजकुमार बोला — "पिता जी, मॉ, बहिनों, मैं आप सबको अपनी पत्नी से मिलाना चाहता हूँ।"

उसकी सबसे छोटी बहिन ने ताली बजायी पर उसकी दूसरी तीनों बहिनों को एक ग्वालिन को अपनी भाभी बनाने का विचार कुछ जमा नहीं। जब वे उसको बिल्कुल ही नहीं सह सकीं तो उन्होंने उसकी हॅसी उड़ानी शुरू कर दी और उसका अपमान करना शुरू कर दिया।

राजा ने अपने बेटे की शादी उस ग्वालिन के साथ तय कर दी और शादी का दिन पास आने लगा। शादी से पहले दुलहिन ने राजकुमार की बहिनों से कहा — "अब मुझे घर जाना चाहिये और अपने माता पिता से मिलना चाहिये। मुझे बताओ कि मैं तुम लोगों के लिये वहॉ से क्या क्या भेंट ले कर आऊँ।"

सबसे बड़ी लड़की ने कहा — "एक बोतल दूध।"

दूसरी लड़की बोली — "थोड़ी सी रिकोटा चीज़[19]।"

तीसरी लड़की बोली — "मुझे तो एक टोकरी लहसुन चाहिये।"

यह सुन कर वह ग्वालिन अपने घर चली गयी पर वह खेत पर नहीं गयी। अब की बार वह अपने असली माता पिता के पास गयी जिन्होंने उसको ज़मीन के नीचे उसके लिये महल बनवा कर उसमें उसको **18** साल तक कैद रखा था।

एक हफ्ते बाद वह एक बहुत सुन्दर गाड़ी में जिसको सफेद घोड़े खींच रहे थे दुलहे के घर लौटी। उसको इतनी बढ़िया शाही गाड़ी में बैठा देख कर उसकी तीनों बड़ी ननदों के मुँह से एक साथ ही निकला — "अरे यह ग्वालिन एक शाही गाड़ी में?"

वह ग्वालिन गाड़ी में से उनकी भेंटें ले कर बाहर निकली। उसने अपनी सबसे बड़ी ननद को एक बोतल दूध दिया। यह दूध एक चॉदी की बोतल में था और यह बोतल एक सुनहरे कपड़े में लिपटी हुई थी।

[19] It is kind of processed Paneer.

दूसरी ननद को उसने रिकोटा चीज़ दी। वह सोने के डिब्बे में रखी थी और तीसरी ननद को उसने एक टोकरी लहसुन दी। उस लहसुन की कलियॉ हीरे की और पत्ते पन्ने के थे।

उसकी सबसे छोटी ननद ने पूछा — "और तुम मेरे लिये क्या ले कर आयीं भाभी जिसने हमेशा तुम्हें इतना प्यार किया?"

ग्वालिन ने गाड़ी का दरवाजा खोला और उसमें से उसने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान को बाहर निकाला। उसको उसने अपनी सबसे छोटी ननद के हवाले करते हुए उससे कहा — "यह मेरा छोटा भाई है जो मेरे वहॉ से आने के बाद पैदा हुआ था। इसे मैं तुम्हें सौंपती हूॅ।"

ग्वालिन की शादी उस राजकुमार से हो गयी और राजकुमार की बहिन की शादी उसके बाद ग्वालिन के भाई से हो गयी। सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

# 4 राजकुमार[20]

शर्तों पर बच्चों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा था जिसके पास बहुत कुछ था। पर उसकी पत्नी के कोई बच्चा नहीं था इसलिये वह बहुत दुखी रहता था।

एक दिन वह बहुत उदास बैठा था कि एक दरबारी उसके पास आया और बोला — "ओ ताकतवर योर मैजेस्टी, आपके कोई बेटा नहीं है और आपने किसी को कुछ दिया भी नहीं है। तो आपकी प्रजा आपके बारे में क्या सोचेगी। आपने जो इतनी धन दौलत इकट्ठी कर रखी है आप इसका क्या करेंगे।"

अपने दरबारी के यह शब्द राजा के दिल को लग गये। उसने सोचा यह दरबारी कहता तो ठीक ही है मेरी इतनी सारी धन दौलत का क्या होगा। सो उसने अगले दिन ही अपनी प्रजा के लिये एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया और उसमें उसने खूब दान दिया।

[20] The Prince (Tale No 10) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

उसी समय न जाने कहाँ से एक बुढ़िया वहाँ आयी। वह राजा के पास आयी और बोली — "अगर मैं तुम्हें एक बेटा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे।"

राजा बोला — "जो तुम माँगोगी मैं तुम्हें वही दूँगा।"

इस पर बुढ़िया ने अपनी जेब से एक सेब निकाला उसे तीन हिस्सों में काटा और राजा को देते हुए बोली — "इसको अपनी पत्नी को खाने के लिये दे देना। इससे उसको तीन बच्चे होंगे। पर याद रखना कि मैं सात साल बाद आऊँगी तब तुम मुझे अपने उन तीनों बेटों में से सबसे छोटा बेटा मुझे दे देना।"

राजा ने हामी भर दी। वह सेब उसने अपनी रानी को खाने के लिये दे दिया और रानी ने उसे खा लिया। समय आने पर रानी ने तीन बेटों को जन्म दिया। उनका सबसे छोटा बेटा सबसे ज़्यादा सुन्दर था।

राजा जब अपने तीनों बेटों के देखता तो वह तो यह सोच भी नहीं सकता कि वह अपने सबसे छोटे बेटे को किसी को दे देगा।

उसने अपने मन में सोचा "मैं अपने इस बेटे को नौ तालों में बन्द करके रखूँगा। और जब वह बुढ़िया आयेगी तब मैं उससे कह दूँगा कि मेरा सबसे छोटा बेटा मर गया। पर वह मेरे दोनों बड़े बेटे ले जाना चाहे तो ले जा सकती है।"

सात साल जाते कितनी देर लगती है। सात साल हवा की तरह से उड़ गये। और सात साल बाद वह बुढ़िया राजा के दरवाजे पर खड़ी थी। उसने राजा का सबसे छोटा बेटा माँगा।

राजा ने वैसा ही किया जैसा उसने सोचा था। उसने अपने सबसे छोटे बेटे को नौ तालों में बन्द कर दिया और बुढ़िया से कहा — "मेरा सबसे छोटा बेटा तो मर गया है पर मेरे ये दोनों बड़े बेटे यहाँ है तुम इन्हें ले जाओ।"

अब वह बुढ़िया तो उसका विश्वास ही न करे। उसने उसके छोटे बेटे को ढूँढने के लिये महल का हर कोना छाना नौ ताले भी खोले और राजा के सबसे छोटे बेटे को ले गयी। वह उसको अपने साथ ले कर अपने घर चली गयी।

कुछ दूर जाने पर वे एक नदी के पास आये जहाँ एक बुढ़िया मैली चादरें आदि धो रही थी। जब उसने सुन्दर राजकुमार को देखा तो उसको पुकारा और दुखी हो कर कहा — "क्या तुझे मालूम है कि तू अपनी बदकिस्मती की तरफ ले जाया जा रहा है। तू उस जादूगरनी के पीछे जा ही क्यों रहा है। तू यकीनन उसके हाथों से ज़िन्दा नहीं बच सकता। वह तुझे मार देगी।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह उस जादूगरनी के पास गया और उससे कहा — "ज़रा मैं इस बुढ़िया से बात कर लूँ मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ।" जादूगरनी ने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

राजकुमार अपने घर चला गया एक प्याले में पानी भरा और आग के पास रख दिया। यह करके वह बोला — "जब यह पानी खून में बदल जायेगा तो मैं मर जाऊँगा और अगर यह ऐसे ही साफ रहा तो मैं ज़िन्दा रहूँगा।"

इसके बाद वह वहाँ से चला गया और जा कर उस जादूगरनी से मिल गया फिर दोनों साथ साथ आगे चलने लगे।

चलते चलते वे एक अँधेरी घाटी में पहुँच गये। उसके दोनों तरफ पहाड़ थे। उस जादूगरनी का घर वहीं एक चट्टान की गुफा में था। उसके घर में तीन बेटियाँ थीं दो घोड़े थे एक उसके अपने लिये और एक उसकी बेटियों के लिये। बुढ़िया अन्दर गयी और राजकुमार को अपनी बेटियों को सौंपा और जा कर सो गयी।

अब इस जादूगरनी को सात दिन सात रात तक सोने की आदत थी और उस समय उसको कोई उठा भी नहीं सकता था।

जब उसकी बेटियों ने राजकुमार को देखा तो वह उनको बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने आपस में बात की कि यह कितना सुन्दर राजकुमार है इसको मारना ठीक नहीं है। हम इसको अपनी माँ को खाने नहीं देंगे। हमें इसकी इसके भाग जाने में सहायता करनी चाहिये।

सब बहिनें एक साथ बोलीं "हाँ हम इसके भाग जाने में इसकी सहायता करेंगे।" और उन्होंने उसको भगा देने का प्लान बनाया।

उनमें से एक ने कहा — "अगर हमारी मॉ तुमको पकड़ ले तो तुम यह कंघा अपने पीछे फेंक देना। इससे तुम्हारे और उनके बीच में एक बहुत ही घना जंगल पैदा हो जायेगा और हमारी मॉ को उसे पार करने में बहुत मुश्किल होगी।"

दूसरी बहिन ने उसको एक कैंची दी और कहा — "जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह कैंची अपने पीछे फेंक देना तो तुम्हारे और उनके बीच में ऊॅची नीची बहुत सख्त चट्टानें खड़ी हो जायेंगी जिनको पार करने में उनको बहुत मुश्किल होगी और तुम इतनी देर में जल्दी से भाग जाना।"

सबसे छोटी बहिन ने उसको नमक का एक डला दिया और कहा — "जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह नमक का डला अपने पीछे फेंक देना तो तुम दोनों के बीच में एक समुद्र पैदा हो जायेगा जिसे हमारी मॉ पार नहीं कर पायेगी।"

यह सब कह कर उन्होंने उसको जीन कस कर अपना वाला घोड़ा दिया और वह सब भी उसको दिया जो वह चाहता था और वहॉ से उसको भेज दिया। राजकुमार ने भी उनसे वे तीनों चीज़ें लीं घोड़े पर सवार हुआ उन्हें धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिया।

सात दिन बीत जाने के बाद जादूगरनी जागी तो उसने अपना खाना ढूॅढा पर वह तो वहॉ था ही नहीं। वह अपने घोड़े के पास

गयी और उससे पूछा — "पहले हम रोटी खा लें या फिर तुरन्त ही चल दें?"

घोड़े ने जादूगरनी से कहा — "चाहे हम रोटी खायें या न खायें पर हम उसको पकड़ नहीं सकते।"

पर जादूगरनी ने अपना इरादा नहीं छोड़ा। उसने अपनी रोटी खायी घोड़े पर चढ़ी और राजकुमार को ढूँढने चल दी। कुछ दूर जाने के बाद ही उसने राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने पीछे मुड़ कर देखा और बुढ़िया को अपने पास आते देख कर उसने अपनी जेब से कंघा निकाला और अपने पीछे फेंक दिया। कंघा पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में इतना घना जंगल पैदा हो गया कि उसमें से एक मक्खी भी नहीं गुजर सकती थी।

बुढ़िया का रास्ता रुक गया था जिससे वह कुछ नाराज सी हो गयी। पर किसी तरह से वह उसको पार कर गयी। जंगल पार करके जब वह खुली जगह में पहुँची तो उसने अपने घोड़े को एड़ लगायी और फिर से राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने फिर बुढ़िया जादूगरनी को आते देखा तो इस बार उसने अपनी कैंची निकाली और अपने पीछे फेंक दी। कैंची पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में लोहे की तरह सख्त पहाड़ी खड़ी हो गयी। उसे कोई लोहा नहीं काट सकता था।

उसको पार करने में जादूगरनी के घोड़े के खुर कट गये इससे वह और आगे नहीं जा सका और वहीं गिर पड़ा पर वह जादूगरनी भी छोड़ने वाली नहीं थी। वह घोड़े से कूदी और पैदल ही चलने लगी। उसने वह पहाड़ी पार की और मैदान में पहुँच कर फिर जल्दी जल्दी चलने लगी।

वह धरती के ऊपर उड़ी जैसे उसके पंख लगे हों। उड़ कर उसने फिर से राजकुमार को पकड़ लिया। राजकुमार ने देखा कि जादूगरनी तो फिर चली आ रही है तो अबकी बार उसने अपनी जेब से नमक का डला निकाला और अपने पीछे फेंक दिया।

नमक का डला फेंकते ही उन दोनों के बीच एक समुद्र पैदा हो गया इतना बड़ा कि उसको कोई चिड़िया पार नहीं कर सकती थी। बुढ़िया बहुत निडर थी। वह इससे भी नहीं डरी और समुद्र में चल दी। उसका इरादा था कि वह उसको पार कर लेगी पर वह उसमें डूब गयी।

राजकुमार आगे बढ़ता जा रहा था। पर वह अक्सर पीछे भी देख लेता था। उसने देखा कि अब वह बुढ़िया कहीं नहीं थी। यह देख कर वह बहुत खुश हो गया और खुशी खुशी आगे बढ़ता गया। पर उसको यह पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है।

चलते चलते उसे भूख लग आयी। आखिर उसको एक जगह आग जलती दिखायी दी। वह वहाँ गया तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बहुत बड़ी आग जल रही है और उसके ऊपर शराब की एक

केटली थी और खाना बन रहा था। उसके चारों तरफ नौ देवियॉ[21] लेटे हुए थे। ये सब आपस में भाई थे।

वे सब बहुत ज़ोर से सो रहे थे। पर उनमें एक लंगड़ा देवी भी था जो इन सबको देख रहा था। राजकुमार ने देवियों से इजाज़त लेने का इन्तजार नहीं किया वह तो बस आया आग के ऊपर से बरतन उठाया उसमें से खाना खा कर उसको फिर से आग पर रख दिया और फिर वह भी वहीं लेट गया और खर्राटे मारने लगा।

लॅगड़ा देवी आश्चर्य से दूर से यह आश्चर्य से देख रहा था।

कुछ देर बाद एक देवी उठा। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि वहॉ तो एक आदमी सो रहा है। उसको देख कर उसने खुशी से कहा — "आहा आज तो यह हमारे लिये बहुत अच्छा खाना है।" कह कर वह उस लड़के की तरफ चल दिया।

पर लंगड़ा देवी बोला — "तुम उसको छोड़ दो। उसको तुम छूना भी नहीं। हमें उसको डराना है। उसने आग पर से हमारा बरतन उठा कर उसमें से खाना खाया है और खाना खा कर फिर से उसे आग पर रख दिया है। उसने वह किया है जो हम दस लोगों के लिये भी करना मुश्किल है।"

देवी ने सोचा यह तो यह ठीक कह रहा है और वहॉ से चला गया। एक और देवी उठा और उसने भी यही करना चाहा जो पहले वाला करना चाह रहा था पर लंगड़े देवी ने उसको भी रोक दिया।

[21] Devi seems like some demon type of beings.

इसी तरह से सारे देवी उठे और उन सबने वही करना चाहा जो पहले वाले देवी ने करना चाहा था पर लंगड़े देवी ने सबको रोक दिया।

जब सारे देवी उठ गये तब सबने खाना शुरू कर दिया। उसी समय राजकुमार भी उठा। वह देवियों के पास आया और उनसे उससे भाईचारे के लिये प्रार्थना की।

देवियों ने पूछा — "तुम कौन हो जो इतनी हिम्मत वाले हो। और तुम यहॉ क्यों आये हो।"

राजकुमार बोला — "मैं तो भूखा था। मैंने आग देखी सो मैं इधर चला आया।"

देवियॉ बोले — "अगर तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खायें तो पहले तुम वहॉ तक जाओ जहॉ तुम्हें एक चौराहा मिलेगा। वहॉ तुमको एक लड़की रूमाल बिछाये मिलेगी। अगर तुम उसका रूमाल हमें ला कर दे दो तब हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खा सकते हैं।

और अगर तुम उसका वह रूमाल नहीं ला सके तो फिर हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। बहुत सारे लोगों ने उस लड़की का वह रूमाल लेने की कोशिश की है पर वे ले नहीं पाये। वह लड़की उनको हमेशा ही मार देती है।"

देवियों ने सोचा कि इस तरह से यह राजकुमार भी मारा जायेगा और इस तरह से वे उससे छुटकारा पा जायेंगे।

राजकुमार चल दिया और एक चौराहे पर आया और लो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ कर नीचे आयी। एक रूमाल उसके आगे आगे फैला हुआ आ रहा था इससे वह लड़की को देख नहीं पा रहा था।

राजकुमार उसके सामने आया और उसने वह रूमाल पकड़ लिया। पर जैसे ही वह रूमाल ले कर जाने वाला था कि उस लड़की ने उसके ऊपर हमला किया। राजकुमार उस लड़ाई में जीत गया। लड़ाई में राजकुमार के हाथ में उस लड़की का एक सुनहरा जूता रह गया।

वह लड़की का रूमाल ले कर देवियों के पास आया और उनको उसका सुनहरा जूता दे कर कहा — "आप लोग शहर जायें वहाँ इसको बेच कर मुझे इसके पैसे ला कर दें।"

देवियों ने लंगड़े देवी को वह सुनहरा जूता दे कर शहर भेज दिया। शहर जा कर वह एक सौदागर से मिला और उसे वह जूता दिखाया।

उस जूते को देख कर वह सौदागर बोला — "मेरी पत्नी के पास ऐसे ही सुनहरी जूते हैं। ऐसा लगता है कि तुमने उसका जूता चुरा लिया है।"

लंगड़ा देवी कसम खा कर बोला — "नहीं हमने यह जूता चुराया नहीं है हमने तो यह जूता पाया है।"

पर उस सौदागर को उस की बात पर पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देवी से वह जूता तो ले लिया और उसे ताले में बन्द कर दिया।

दूसरे देवियों ने उसका बहुत देर तक इन्तजार किया पर जब वह नहीं आया तो उन्होंने अपने नवें भाई को उसे ढूँढने भेजा। जब वह शहर में पहुँचा जहाँ लंगड़ा देवी जूता बेचने गया था तो वहाँ जा कर उसने अपने लंगड़े भाई के बारे में पूछताछ की।

उसको लंगड़े देवी के बारे पूछताछ करते देख कर उन्होंने सोचा यह आदमी यकीनन उस चोर का साथी होगा। यह सोच कर उन्होंने उसको भी ताले में बन्द कर दिया।

बचे हुए देवियों ने अपने नवें भाई का इन्तजार किया और जब उन्होंने देखा कि वह भी लौट कर नहीं आया तो उन्होंने अपने आठवें भाई को भेजा। उन लोगों ने उसको भी ताले में बन्द कर दिया। फिर सातवाँ गया फिर छठा गया इस तरह सभी भाई वहाँ गये पर सबको ताले में बन्द कर दिया गया।

जब सब देवियाँ ताले में बन्द हो गये और कोई वापस लौट कर नहीं आया तो राजकुमार ने सोचा "ऐसा सबके साथ क्या हो सकता है कि कोई भी वापस लौट कर नहीं आया। मैं जाता हूँ और मैं ढूँढता हूँ उनको। हो सकता है कि मुझे पता चल जाये कि वे किस मुसीबत में फँस गये हैं।"

ऐसा सोच कर वह उठा और शहर की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने भी लंगड़े देवी के बारे में पूछताछ की। जब सौदागर को पता चला कि फिर कोई लंगड़े देवी को पूछता चला आ रहा है तो उसने उसको भी पकड़ना चाहा।

पर राजकुमार बोला — "अगर मैं अपने सुनहरे जूते का दूसरा जूता नहीं पाऊँगा तो आप मुझे झूठा कह सकते हैं और फिर आप मेरे और देवियों के साथ जो कुछ करना चाहें वह कर सकते हैं।

पर अगर वह मुझे मिल गया और आप लोगों ने झूठ बोला तो फिर जो हम आपके साथ करना चाहेंगे वह करेंगे।"

सौदागर बोला "ठीक है।"

सो राजकुमार उस सुनहरी जूते का दूसरा जूता देखने के लिये चल दिया। वह बहुत दूर तक गया और एक ऐसे राज्य में आया जो समुद्र के किनारे था। इस राज्य पर एक सूरज जैसी चमकती लड़की राज करती थी।

जो भी उस राज्य में गेंहू बेचने जाता था उसको उस लड़की से मिलना पड़ता था। वह लड़की उस गेंहू को और उस गेंहू के लाने वाले दोनों को समुद्र में फिंकवा देती थी और वहाँ से कोई बच नहीं सकता था।

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने सोचा कि वह इस देश में गेंहू ले कर आयेगा और देखेगा कि वह लड़की उसके साथ क्या

करती है। वह गेंहू लाने गया और गेंहू से एक नाव भर कर उस राज्य को लौटा।

जब वह समुद्र के किनारे के पास आया तो न जाने कहॉ से एक सुन्दर लड़की वहॉ आयी। उसने अपना हाथ फैलाया और वह गेंहू वाली नाव डुबोने को थी कि राजकुमार ने नाव में अपना पैर मारा जिससे वह नाव हिल गयी और नाव डूबने से बच गयी।

फिर उसने उस लड़की का हाथ पकड़ लिया और उसको अपनी तरफ खींचा। यह देख कर कि उसकी कोशिश बेकार कर दी गयी है उस लड़की ने अपनी पूरी ताकत लगा कर अपने आपको उससे खींचा। वह तो उसके हाथ से निकल आयी पर उसकी ऑगूठी राजकुमार के हाथ में रह गयी।

इस तरह से उसने उस लड़की को हरा दिया था। इसके बाद अब जो भी वहॉ गेंहू लाना चाहता था ला सकता था और उस राज्य में अब बहुत सारा गेंहू था।

उस देश के लोग राजकुमार के पैरों पर गिर पड़े और उसके घुटनों को चूमा। उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उनका राजा बन जाये। पर वह तो उनका राजा बनने वाला नहीं था।

उसने कहा — "मैं तो यहॉ किसी दूसरे काम से आया हूॅ। असल में तो मुझे केवल एक खास जूते की तलाश है और मुझे कुछ नहीं चाहिये।" और फिर उसने उनको अपनी कहानी बता दी।

वहॉ उसको वह जूता नहीं मिला तो वह उस राज्य को छोड़ कर फिर आगे चला और एक दूसरे देश में आया। यहॉ आ कर उसे पता चला कि एक सुन्दर लड़की ने राजा के बेटे को मार दिया है और उसको एक तहखाने में दफ़न कर दिया गया है।

अब हर रात वह लड़की वहॉ आती है और उसको डंडियों से मारती है। ऐसा करने से वह राजा का बेटा फिर से ज़िन्दा हो जाता है। उसके बाद वे दोनों खाना खाते हैं और सुबह तक का समय आनन्द से गुजारते हैं।

सुबह को वह उसे फिर डंडे से मारती है जिससे वह फिर से लाश बन जाता है और वह लड़की वहॉ से उड़ जाती है।

जब राजकुमार ने उस नौजवान की यह कहानी सुनी तो उसने उसकी सहायता करने का फैसला कर लिया। वह उसकी कब्र में घुसा और वहॉ उस लड़की का इन्तजार करने लगा।

कुछ ही देर में वह लड़की वहॉ उड़ती हुई आयी। उसने अपनी जेब से डंडियॉ निकालीं और उनसे राजा के बेटे को मारती रही जब तक वह ज़िन्दा नहीं हो गया।

फिर उन्होंने खाना खाया और रात भर आनन्द मनाते रहे। सुबह होने पर जैसे ही वह लड़की उसको डंडियों से मारने वाली थी कि हमारे राजकुमार ने उसके हाथ से डंडियॉ छीन लीं। इस तरह से वह राजा के बेटे को डंडिया नहीं मार पायी और वह ज़िन्दा रहा।

राजकुमार उसको फिर उसके पिता के पास ले गया। राजा अपने बेटे को ज़िन्दा पा कर बहुत खुश हुआ और राजकुमार को अपना राज्य देने के लिये कहा पर वह राजा बनना नहीं चाहता था।

उसने कहा — "मैं एक खास सुनहरे जूते की तलाश में हूँ अगर मुझे वह मिल जाये तो मैं खुश हूँ। मुझे उसे ढूँढना है इसलिये मैं चलता हूँ।" कह कर वह वहाँ से चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद वह एक खुले मैदान में आ गया। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर घर देखा। उसको देख कर उसने सोचा "पता नहीं यहाँ कौन रहता होगा।" और वह उस घर की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसको एक अरब कुछ खच्चरों को खाना खिलाता दिखायी दिया। उसने उससे पूछा — "भाई क्या तुम जानते हो कि यह घर किसका है। यहाँ कौन रहता है।"

अरब ने इधर उधर देखा और बोला — "मैं तुम्हारा सिर पहले खाऊँ या पैर पहले खाऊँ।"

राजकुमार बोला — "मैंने तो तुमसे इस घर के बारे में पूछा था तो तुम उसका जवाब क्यों नहीं देते।"

अरब ने फिर चारों तरफ देखा और बोला — "मैं तुम्हें सिर से खाऊँ या फिर पैर से।"

राजकुमार फिर बोला — "जहाँ तक खाने का सवाल है मैं तुम्हें अभी बताता हूँ कि मैं क्या करने वाला हूँ।" कह कर राजकुमार ने

अरब को इतनी ज़ोर से मारा कि वह नौ पहाड़ के दूसरी तरफ जा कर पड़ा। फिर उसने खच्चरों को मारा और घर आया।

वह उस घर के चारों तरफ घूमता रहा और उसको देख कर बहुत खुश हुआ। फिर वह खिड़की से हो कर घर में घुसा और उसके सब कमरे देख आया। इन कमरों में से एक कमरे में एक सोने का सिंहासन रखा था और उस पर रखे थे सोने के जूते जैसे कि वह ढूँढ रहा था।

उसने अपने मन में सोचा "शायद यह उसी लड़की का घर है जिसका जूता मेरे पास है। मैं यहाँ इन्तजार करता हूँ और देखता हूँ कि क्या होता है।" वह सिहासन के नीचे छिप कर बैठ गया और इन्तजार करने लगा।

जल्दी ही वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ती हुई आयी। फिर दूसरी फिर तीसरी और आखीर में वह अरब। वे चारों खाना खाने बैठ गये। पलक झपकते ही अरब ने उन तीनों लड़कियों के लिये कपड़ा बिछा दिया। और जो कुछ जिसकी इच्छा हुई वह सब उसके लिये वहाँ उस कपड़े पर आ कर रखा गया।

कुछ समय बाद सबसे बड़ी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "भगवान उस नौजवान को लम्बी उम्र दे जो मुझसे मेरा रूमाल और मेरा सुनहरा जूता ले गया।" यह कह कर उसने वह शराब पी और शराब का कटोरा नीचे रख दिया।

उसके बाद दूसरी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "उस नौजवान की लम्बी उम्र के लिये जिसने मेरे हाथ से मेरी अँगूठियाँ छीन लीं और एक राज्य को गेंहूँ दिया।" उसने भी अपने शराब के कटोरे में से शराब पी और कटोरा नीचे रख दिया।

फिर सबसे छोटी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसने मेरे हाथ से डंडियाँ छीनीं और राजा के बेटे को ज़िन्दगी दी।"

उसके बाद अरब ने अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी उम्र के नाम जिसने मुझको इतनी ज़ोर से मारा कि मैं नौ पहाड़ों के उस पार जा कर पड़ा।" कह कर उसने भी उस प्याले में से शराब पी कर अपना प्याला नीचे रख दिया।

यह सुन कर राजकुमार सिंहासन के नीचे से निकला शराब का एक प्याला उठाया और बोला — "मुझे भी यह जाम किसी के नाम में पीना है। यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसका मैंने रूमाल लिया है।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला और सबसे बड़ी बहिन को दे दिया।

उसने फिर शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने अँगूठियाँ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया।

फिर उसने अपनी जेब से अँगूठियाँ निकालीं और दूसरी बहिन को दे दीं।

उसने फिर अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने डंडियाँ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से डंडियाँ निकालीं और तीसरी बहिन को दे दीं।

फिर वह अरब की तरफ घूमा और बोला — "यह जाम उस अरब की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसको मैंने नौ पहाड़ों के उस पार फेंक दिया था।"

उसके बाद तो तीनों बहिनें कूद पड़ीं कि "यह शादी मुझसे करेगा।" "नहीं नहीं यह शादी मुझसे करेगा।" और उन तीनों ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया।

राजकुमार बोला — "तुम लोग आपस में क्यों लड़ती हो। मैं सबसे छोटी लड़की से शादी करूँगा क्योंकि मैं अपने तीन भाइयों में सबसे छोटा हूँ। और तुम दोनों बड़ी बहिनें मेरे दोनों बड़े भाइयों से शादी करना।

लड़कियों ने पूछा — "इधर की तरफ आने का तुम्हारा क्या काम है।"

राजकुमार बोला — "मैं यहाँ दूसरा सुनहरा जूता ढूँढने के लिये आया था पर मुझे तो वह यहीं मिल गया। इस जूते की वजह से नौ

देवी भाई एक शहर में कैद हैं। और अगर मैं इसके बिना वहाँ गया तो मैं भी उनके साथ ही वहाँ कैद हो जाऊँगा।"

बहिनें बोली — "यह जूता तुम्हारा है। इसके अलावा और भी जितने जूते तुम्हें चाहिये तुम ले जा सकते हो। तुम अरब की पीठ पर बैठ जाओ और तुम तीन घंटे में उस शहर में पहुँच जाओगे।"

राजकुमार ने वैसा ही किया जैसा उन बहिनों ने उससे करने के लिये कहा था। उसने सुनहरे जूतों से एक थैला भरा अरब की पीठ पर बैठा और तीन घंटे में वह उस शहर में था।

उसको देख कर देवी लोग बहुत खुश हुए। उन्होंने सौदागर को बुलाया तो वह जूते ले कर आया। उसने एक एक करके अपने सारे जूते निकाले पर उस एक सुनहरी जूते जैसा उनमें से कोई नहीं था। उसके बाद राजकुमार ने अपने थैले में से जूते निकाले तो सौदागर झूठा साबित हुआ। क्योंकि वे सब जूते लंगड़े देवी के जूते जैसे थे।

राजकुमार ने सौदागर को देवियों को सौंप दिया और कहा "इसका तुम लोग जो चाहे वह करो। इसका सब कुछ बेच दो या और जो कुछ भी। पर मुझे इजाज़त दो मुझे अभी अपने रास्ते जाना है।"

जब देवियों ने यह सुना तो उन्होंने राजकुमार को अपने पास रुक जाने के लिये कहा पर वह नहीं माना। वह वहाँ से तीनों बहिनों के पास आया और सबसे छोटी वाली लड़की से शादी कर ली।

तीनों बहिनों ने अरब को एक घोड़े पर टॉगने वाला थैला दिया जिसमें उनके लिये वह सब कुछ था जो उनको सफर के लिये चाहिये था और उसके हाथ में एक पेड़ दिया और कहा — "राजकुमार के पिता के राज्य में जाओ और जब उनके महल के पास फलॉ जगह पहुँचो तो यह पेड़ वहॉ लगा देना।

यह एक बड़े मैदानी पेड़ की तरह बड़ा हो जायेगा। इसके नीचे एक नदी बहेगी। उस नदी के किनारे तुम लोग एक कपड़ा बिछा देना और फिर हमारे आने का इन्तजार करना।"

अरब ने वैसा ही किया जैसा उससे करने के लिये कहा गया था। उसके कपड़ा बिछाते ही लड़कियॉ वहॉ आ गयीं।

राज्य के हर आदमी और स्त्री ने यह सुना तो वह उनको देखने के लिये वहॉ आ गया। राजकुमार के माता पिता अभी भी अपने बेटे के गम में बहुत दुखी थे।

राजकुमार जो पानी से भरा प्याला आग के पास रख कर गया था वह वहॉ अभी तक वैसा का वैसा ही रखा था पर फिर भी वे उसको ज़िन्दा देखने की उम्मीद बिल्कुल छोड़ चुके थे। फिर भी जब उन्होंने लड़कियों के आने की खबर सुनी तो वे भी उन लड़कियों को देखने गये।

राजकुमार ने जब अपने माता पिता को वहॉ आते देखा तो वह बहुत आश्चर्य में पड़ गया उसने उनसे पूछा कि वे इतने दुखी क्यों

थे। उन्होंने कहा कि उनका एक बेटा खो गया है इसलिये वे इतने दुखी थे।

राजकुमार बोला — "मैं ही तो आपका वह बहुत दिनों से खोया हुआ बेटा हूँ।"

अपने बेटे को ज़िन्दा देख कर राजा और रानी बहुत खुश हुए और उसको अपने घर ले गये। घर जा कर उन्होंने अपने तीनों बेटों की शादियाँ इतनी धूमधाम से कीं कि सारा महल गूँज उठा।

# 5 कैलेबाश का बच्चा[22]

शर्तों पर बच्चों की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में बच्ची इस शर्त पर अपने माता पिता के पास जाती है कि उसको कोई कैलेबाश की बेटी नहीं कहेगा जो कि वह थी।

इस लोक कथा में एक राजा और रानी को एक लड़की को केवल इस शर्त पर अपनी बेटी बना कर रख सकते हैं जब तक कि उसको कोई कैलेबाश की बेटी नहीं कहता। जैसे ही कोई उसको कोई भी कैलेबाश की बेटी कहेगा वह उनके पास से चली जायेगी।

है न कुछ अजीब सा शाप? पर इससे भी अजीब बात यह है कि यह बात किस आदमी ने कही जिससे वह इस शाप से छूट सकी।

एक बार की बात है कि नाइजीरिया में एक राजा और रानी थे। उनकी शादी को कई साल हो चुके थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। जैसे जैसे राजा बड़ा होता जा रहा था वह सोचता रहता था कि उसके बाद उसका वारिस कौन बनेगा।

[22] The Calabash Child – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa.
Adapted from the Book, "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001.

उसकी पत्नी भी इस बात को ले कर बहुत चिन्ता करती थी। वे दोनों दिन रात अपने भगवान "ची"[23] से एक बच्चे के लिये प्रार्थना करते रहते।

इस राजा ने भी बहुत सारे राजाओं की तरह कई एकड़ जमीन में खेती की थी और रानी ने भी जैसा कि अक्सर रानियॉ नहीं करती हैं उन खेतों की देखभाल में बहुत समय लगाया था।

रोज वह बहुत सारे नौकर ले कर खेत पर जाती और उनकी देखभाल करती। शाही घर की स्त्री होते हुए भी उसने कोकोआ याम, बीन्स और कैलेबाश[24] के खेत लगाये थे।

इस साल रानी के खेतों की फसल बहुत अच्छी हुई थी। कोकोआ याम की पत्तियॉ पहले से ज़्यादा हरी और चौड़ी थीं। बीन्स और कैलेबाश के पौधे भी अपने खेतों की हदों से बाहर निकले पड़ रहे थे।

[23] Chi – their personal god

[24] Calabash is a dry outer cover of a pumpkin-like fruit used to keep dry or wet things – see the picture of its tree above.

रानी यह सब देख कर बहुत खुश थी। उसको पूरी उम्मीद थी कि इस बार उसकी फसल बहुत अच्छी होगी। समय आने पर पौधे बड़े हुए, उनमें कलियाँ आयीं और फिर फल भी आने लगे।

एक दिन रानी सुबह मुर्गे के बाँग देने से भी पहले जाग गयी। उसने अपनी सुबह की प्रार्थना की और हमेशा की तरह भगवान से अपने लिये एक बच्चा माँगा। फिर वह अपनी खेती की देखभाल के लिये अपने खेतों पर चली गयी।

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने कैलेबाश के एक पौधे के पास एक छोटी सी बच्ची को बैठे देखा। रानी को देखते ही वह बोली — "ओजीफ़ी[25] नमस्ते।"

"नमस्ते मेरी बेटी। तुम यहाँ इतनी सुबह सुबह इस खेत पर क्या कर रही हो? और तुम्हारी माँ कहाँ है? क्या उसको पता है कि तुम यहाँ इस तरह अकेली बैठी हो?"

लड़की ने जवाब दिया — "यही मेरा घर है।"

रानी तो यह सुन कर गड़बड़ा गयी। उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह लड़की कह क्या रही थी। यह खेत तो किसी भी घर से बहुत दूर है और उसको लगा कि उस लड़की को तो मालूम ही नहीं कि वह कह क्या रही है।

उसने फिर कहा — "पर बेटी, सबसे पास के घर से यहाँ तक आने के लिये तो एक मजबूत आदमी को भी मुर्गे की दूसरी बाँग से

[25] Ojiefi

ले कर दोपहर तक का समय चाहिये। और मेरे बच्चे तुमको तो इससे भी ज़्यादा समय चाहिये। तुम यहॉ आ कैसे गयीं?"

पर वह लड़की केवल मुस्कुरा दी। उसने अपने आपसे ही कुछ शब्द बड़बड़ाये और अचानक वह एक कैलेबाश में बदल गयी और वह कैलेबाश रानी के पैरों की तरफ लुढ़क गया। रानी के पैरों में आ कर वह फिर से एक बच्ची में बदल गया।

रानी तो यह देख कर आश्चर्य और डर में डूबी खड़ी रह गयी। पर उसकी बच्ची को पाने की इच्छा ने उसके हर डर को जीत लिया और उसने बच्ची को अपने घर चलने के लिये कहा। उसने बच्ची से वायदा किया कि वह उसकी बहुत अच्छी तरीके से देखभाल करेगी।

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई कि रानी उसको अपनी बेटी बनाना चाहती थी पर उसको लग रहा था कि यह कोई अच्छा विचार नहीं था।

वह रानी से बोली — "मुझे आपकी बेटी बनना बहुत अच्छा लगेगा। मुझे मालूम है कि जो कोई स्त्री किसी बच्चे की इतनी अच्छी देखभाल करेगी वह जरूर ही बहुत अच्छी मॉ बनेगी।

मैं दूसरे लोगों के साथ भी रही हूँ पर मुझे उनके साथ रहने का कोई बहुत अच्छा अनुभव नहीं है। इसी लिये मैंने यहॉ अकेले रहने का निश्चय किया है।"

पर रानी अपने इरादों में पक्की थी। उसने लड़की से बहुत जिद की कि वह उसके साथ चले। उसने फिर से उससे वायदा किया कि वह उस लड़की को बहुत अच्छी तरह से रखेगी न कि और दूसरे लोगों की तरह।

लड़की बोली — "ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी पर मेरी एक शर्त है। मुझे मालूम है कि मैं एक कैलेबाश से निकली हूँ फिर भी मैं एक कैलेबाश की बेटी कहलाने से नफरत करती हूँ। जिस दिन भी कोई मुझे कैलेबाश की बेटी कहेगा वह दिन मेरा तुम्हारे साथ आखिरी दिन होगा।"

रानी बोली — "मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि कोई तुमको कैलेबाश की बेटी नहीं कहेगा। मैं राजा की पत्नी हूँ और जो मेरे पति कह देते हैं वह कानून होता है।"

वह बच्ची राजी हो गयी और रानी के साथ उसके घर चली गयी। राजा की पत्नी बहुत खुश थी। वह उसको गले से लगा कर खुशी से रो पड़ी।

आखिर उसको अपना एक बच्चा मिल गया था जिसको वह गले से लगा सकती थी, जिसके लिये वह खाना बना सकती थी और जो उनके बुढ़ापे में उनको खुशी देता।

जब वे घर आये तो रानी ने खेत पर जो कुछ भी हुआ वह राजा से कहा और फिर उसको यह बताया कि किस तरह उसने इस बच्ची को पाया था।

राजा भी उस बच्ची को देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने सारे आदमियों को बुलाया और गॉव भर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। राजा को आखिर एक बच्चा मिल गया था जो उसका वारिस बनता।

राजा ने उस लड़की का नाम ओनूनेलियाकू[26] रखा जिसका मतलब होता है "पैसा खाने वाली", और रानी ने उसका नाम रखा इफ़ेयिन्वा[27] जिसका मतलब होता है "बच्चे के बराबर कोई नहीं"।

इसके बाद राजा ने सबको मना कर दिया कि वे उसको कभी भी कैलेबाश की बच्ची कह कर नहीं पुकारेंगे। अगर किसी ने भी कभी भी उसे इस नाम से पुकारा तो उसे मौत की सजा दी जायेगी।

लोगों ने राजा की लड़की की खबर को बड़े अच्छे तरीके से लिया और वे बहुत दिनों तक दावतें खाते रहे और नाचते रहे। राजा भी बहुत खुश था। उसने अब अपना दूसरा नाम रख लिया था ओबियाजुलू[28] जिसका मतलब होता है "आखीर में शान्ति"।

ओनूनेलियाकू बड़ी हो कर एक बहुत ही सुन्दर स्त्री बन गयी। पास और दूर देशों से राजकुमार उससे शादी की इच्छा प्रगट करने लगे पर राजा ने उसकी शादी करने से मना कर दिया। उसने कहा यह मेरी एकलौती बच्ची है मैं चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद यही मेरी वारिस हो।

---

[26] Onunaeliaku – means "born to consume wealth".

[27] Ifeyinwa – means "nothing like a child"

[28] Obiajulu – means "finally at peace"

हालॉकि कुछ लोग एक लड़की के राजा होने के विचार से खुश नहीं थे पर उनके पास और कोई चारा नहीं था सिवाय इसके कि वे भी राजा की खुशी में खुशी मनायें।

राजा अपनी बेटी ओनूनेलियाकू को कभी अपनी ऑखों से दूर नहीं करता था। उसके पास इतने नौकर थे कि उसने कई नौकर तो केवल उसी की देखभाल और सेवा के लिये दे रखे थे। उसने उसे वह सब कुछ दे रखा था जो उसे चाहिये था।

ओनूनेलियाकू ने भी अपने आपको गॉव की ज़िन्दगी में ढाल लिया था और वह राजकुमारी लगती भी थी।

एक दिन राजा और रानी को कहीं बाहर जाना था। उन्होंने अपने सारे नौकरों को बुलाया और कड़ी ताकीद कर दी कि वे राजकुमारी को एक मिनट के लिये भी अपनी ऑखों से ओझल न होने दें और जो वह कहे वह कर दें। उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिये।

राजा और रानी के जाने के काफी देर बाद ओनूनेलियाकू को भूख लगी सो उसने नौकरों से अपने लिये खाना बनाने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि खाना अभी तैयार होता है।

वह इन्तजार करती रही पर उसका खाना नहीं आया। अब उसको भूख और ज़्यादा लगने लगी तो वह देखने गयी कि क्या मामला है। वह बोली — "मुझे बहुत भूख लगी है। क्या अभी तक खाना तैयार नहीं है?"

नौकरों ने पूछा — "कैसा खाना? हा हा हा हा।"

नौकर उसके ऊपर हॅस पड़े और बोले — "अगर तुमको खाना खाना है तो अपना खाना खुद बना लो।

हम लोग तो इसी दिन के इन्तजार में थे कि कब राजा और रानी यहॉ से जायें तो हम लोग भी कुछ आनन्द मनायें। क्या यह काफी नहीं है कि वे हमको तुम्हारे आस पास छोड़ गये हैं। ओ कैलेबाश की बच्ची।"

यह सुन कर ओनूनेलियाकू बहुत दुखी हुई। उसकी ऑखें रोते रोते लाल और भारी हो गयीं। वह अपने कमरे में वापस चली गयी और वहीं लेटी लेटी बहुत देर तक रोती रही।

फिर उसने वह सारी चीज़ें छोड़ दीं जो राजा ने उसे दी थीं। उसने अपने पुराने कपड़े पहने जिनमें रानी ने उसको पहली बार देखा था और वह पिछले दरवाजे से निकल कर राजा के महल की चहारदीवारी से बाहर चली गयी।

राजा और रानी उसी शाम को वापस लौट आये पर उनको अपनी बेटी ओनूनेलियाकू कहीं दिखायी नहीं दी जो उनका स्वागत करती और उनके गले लगती।

राजा ने पुकारा ओनूनेलियाकू, ओनूनेलियाकू। पर उसका कोई जवाब नहीं था। राजा ने सोचा शायद वह सो गयी हो सो वह घर के अन्दर गया, फिर उसके कमरे में गया पर वह कहीं नहीं मिली। उसका कमरा वैसा ही था जैसा पहले रहता था।

ओनूनेलियाकू – राजा एक बार और चिल्लाया पर उसे कोई जवाब नहीं मिला। अबकी बार रानी ने महल के ऑगन की तरफ भागते हुए पुकारा "इफ़ी, बहुत हो गया। तुम जहॉ भी हो मुझे जवाब दो।"

राजा ने तुरन्त ही अपने सारे नौकरों को बुलाया और उनसे पूछा कि राजकुमारी को क्या हुआ जिसको वह उनकी देखभाल में छोड़ कर गया था।

उनमें से एक नौकर बोला — "हमने उसको नहीं देखा।"

पर राजा ने कहा — "तुमको पता होना चाहिये कि वह कहॉ है और उसको क्या हुआ, क्योंकि मैं तुम लोगों से कह कर गया था कि तुम उसको अपनी ऑखों से एक मिनट के लिये भी ओझल मत होने देना।"

राजा के इस तरह कहने पर एक नौकर ने कहा — "हमने उसको पुराने कपड़े पहने हुए खेतों की तरफ जाते देखा था।"

तुरन्त ही राजा और रानी अपनी बेटी के पीछे भागे। कई गॉव पार करने के बाद उनको वह दिखायी दे गयी।

रानी ने पूछा — "क्या बात है इफ़ी?"

पर इफ़ेयिन्चा कोई भी बात करने के लिये बहुत दुखी थी। रोते रोते उसकी ऑखें लाल थीं। उसने अपने हथेली के पीछे से अपनी ऑखों के ऑसू पोंछे और गाना शुरू किया –

मेरी मॉ ने मुझे पैदा किया, टुमान्वे
और मेरा नाम रखा पैसा खर्च करने वाली, टुमान्वे
मेर पिता ने मुझे पैदा किया, टुमान्वे
और मेरा नाम रखा पैसा खर्च करने वाली, टुमान्वे
मेरे अपने नौकरों ने मुझे देखा, टुमान्वे
और उन्होंने मुझे पुकारा कैलेवाश की बच्ची, टुमान्वे

मैं कैलेवाश की बच्ची हूँ या नहीं, टुमान्वे
मैं अपने घर जा रही हूँ, टुमान्वे
मैं कैलेवाश की बच्ची हूँ या नहीं, टुमान्वे
मैं अपने घर जा रही हूँ, टुमान्वे

राजा और रानी दोनों बहुत दुखी थे। उन्होंने ओनूनेलियाकू से बहुत प्रार्थना की कि वह उनके साथ वापस घर चले।

राजा बोला — "हमारे साथ घर वापस चलो बेटी। मेरे घर के एक नौकर की इतनी हिम्मत कि वह मेरी बेटी को उस नाम से पुकारे जिसको मैंने मना किया है यह नहीं हो सकता।

तुम मेरे साथ चलो और कम से कम चल कर मुझे यह तो बताओ कि वह कौन है जिसने तुमको इस नाम से पुकारा। मैं उसको उसकी करनी का सबक सिखाऊँगा और उसको इज़्ज़त करना सिखाऊँगा, चाहे मैं हूँ या नहीं।"

पर ओनूनेलियाकू तो अपनी जिद पर अड़ी थी कि उसको वहीं वापस जाना है जहॉ से वह आयी थी और इस तरह से उसको बहलाया नहीं जा सकता।

वह बोली — "नौकरों ने मेरा विश्वास तोड़ा है, मेरी इज़्ज़त को बट्टा लगाया है। मुझे नहीं मालूम मैं किस तरह से एक राजा के घर में रह सकती हूॅ। मुझे वहॉ वापस जाने दीजिये जहॉ मैं शान्ति से रह सकूॅ और मेरे भेद कोई न जान सके।"

यह देख कर कि उसने अपनी बेटी को हमेशा के लिये खो दिया है राजा बहुत रोया और रोते रोते उसकी आखें लाल हो गयीं।

हम सब जानते हैं कि एक आदमी के लिये रोना कितना मुश्किल होता है। किसी आदमी का रोना उन सबके दिलों में एक बोझ पैदा कर देता है जो उसको रोते हुए देखता है।

और यहॉ तो केवल एक आदमी नहीं बल्कि एक राजा रो रहा था जिसके पास कुछ भी करने की ताकत थी पर फिर भी उसने उस छोटी लड़की को उसकी इच्छा के खिलाफ रोकने की कोशिश नहीं की।

इस बात से ओनूनेलियाकू का दिल पिघल गया। राजा के प्यार का विश्वास देख कर उसने सोचा कि वह उनके साथ घर वापस जायेगी।

उसके इस फैसले से राजा और रानी बहुत खुश हुए और ओनूनेलियाकू को अपने गॉव वापस ले गये। जब वे सब गॉव पहुॅचे तो ओनूनेलियाकू ने राजा को बताया कि वह कौन सा नौकर था जिसने उसको उस नाम से बुलाया था।

राजा का गुस्सा फिर से बढ़ गया और इतना बढ़ गया कि उसने अपने सब नौकरों को मरवाने का हुकुम सुना दिया। सारे नौकरों को मरवाने से राजा को लगा कि शायद वह ओनूनेलियाकू से फिर से इज़्ज़त पा सकेगा।

पर इससे हुआ कुछ और भी। नौकरों को मरवाने से ओनूनेलियाकू के ऊपर पड़ा एक आत्मा का डाला हुआ जादू टूट गया।

उस आत्मा ने उससे कहा था कि "तुम हमेशा कैलेबाश ही बनी रहोगी जब तक कि तुम्हारे लिये किसी आदमी का खून नहीं बहेगा।"

सो जैसे ही वे नौकर मारे गये उसके ऊपर का वह जादू टूट गया और ओनूनेलियाकू अब एक साधारण लड़की बन गयी।

जब राजा और रानी मर गये तो ओनूनेलियाकू गॉव की ऐज़े न्वान्यी[29] बन गयी। उसके लोग उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे और वह भी उनके ऊपर दया से राज करती थी जैसे उसके पहले उसके पिता किया करते थे।

[29] Eze Nwanyi – queen

यहीं से उस गॉव में स्त्री का राज शुरू हुआ जहॉ पहले केवल आदमी ही राजा हुआ करते थे।

# 6 बाज़ कभी चोरी क्यों नहीं करता[30]

शर्तों पर बच्चे पाने की एक और लोक कथा। यह लोक कथा नाइजीरिया के योरुबा जनजाति में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें एक बच्ची उसके माता पिता को इस शर्त पर दी गयी है कि वह कोई काम नहीं करेगी।

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। उन लोगों की शादी को कई साल बीत चुके थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन पत्नी ने अपने पति से प्रार्थना की कि वह किसी जू जू आदमी[31] के पास जाये और उससे इस बारे में बात करे।

पति अपने जू जू आदमी के पास गया और उससे उसने इस बारे में बात की तो उसने कहा कि "ठीक है कल आना। मैं देखता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ।"

कुछ समय बाद उस जू जू आदमी के जू जू से उनके घर एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम उन्होंने रखा अलान्तेरे[32]।

पति पत्नी दोनों उस जू जू आदमी के बहुत ही अहसानमन्द थे। पति जब उसको धन्यवाद देने गया तो वह बोला "देखो, अलान्तेरे

[30] Why the Hawk Never Steals? - a Yoruba folktale from Nigeria, Africa

[31] Ju Ju Man is the man who does magic or Black Magic. Ju Ju in Nigeria is a kind of magic or Black magic. It is like Indian Tonaa Totakaa. It can be both for good or bad.

[32] Alantere – name of the daughter of the couple.

को किसी भी हालत में काम मत करने देना क्योंकि इस जू जू ने इसको धरती पर भेजने के लिये यही सौदा किया है।"

पति घर लौट गया और जा कर यह सब अपनी पत्नी को बताया। दोनों को इस बात की कोई फिक्र नहीं थी कि उनकी बेटी काम करती है या नहीं क्योंकि बेटी से बढ़ कर उनके लिये और कोई खुशी नहीं थी।

अलान्तेरे बड़ी हुई पर जैसे और घरों में लड़कियॉ काम करती हैं अलान्तेरे को घर का कोई काम नहीं करने दिया जाता था। इस तरह बड़े होने से वह बहुत आलसी हो गयी।

जब अलान्तेरे **18** साल की हुई तो उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। आदमी की दूसरी पत्नी अलान्तेरे को उसके आलसीपने की वजह से बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती थी।

हालॉकि उसको अलान्तेरे के बारे में सब कुछ बता दिया गया था कि वह काम क्यों नहीं करती थी फिर भी उसके ऊपर इस बात का कोई असर नहीं था।

एक दिन जब पति और उसकी पहली पत्नी दोनों बाहर अपने दोस्तों से मिलने गये हुए थे तो उसकी दूसरी पत्नी को अलान्तेरे से काम कराने का मौका मिल गया। उसने अलान्तेरे को खूब पीटा और घर का ऑगन साफ कराया। फिर उसको पानी लाने भेजा।

जैसे ही अलान्तेरे पानी भरने के लिये पानी पर झुकी तो एक अजीब बात हुई। तालाब की देवी ओलूवेरी[33] अचानक तालाब से प्रगट हुई, उसने लड़की को खींचा और तालाब के पानी की गहराइयों में डुबो दिया।

जब अलान्तेरे के माता पिता वापस घर लौटे तो उन्हें अपनी बेटी कहीं दिखायी नहीं दी। इससे उनको चिन्ता हो गयी कि उनकी बेटी कहॉ गयी।

उन्होंने जब दूसरी पत्नी से पूछा कि अलान्तेरे कहॉ है तो उसने उसके बारे में बताने से साफ इनकार कर दिया कि उसको उस लड़की के बारे में कुछ पता नहीं था। हो सकता था कि वह कहीं बाहर चली गयी हो।

जब अलान्तेरे बहुत देर तक नहीं लौटी तो उसके पिता ने उसके दोस्तों के घर मालूम किया पर वह वहॉ भी नहीं थी और उसके दोस्तों को भी नहीं मालूम था कि वह कहॉ थी।

इस पर उसके पिता ने लोगों से कहा कि लगता है कि अलान्तेरे को चुरा लिया गया है इसलिये उसकी तलाश जरूरी है। लोग दो दो और चार चार के समूह में चारों तरफ जा सकते थे और उसका नाम ले ले कर उसको पुकार सकते थे। लोगों ने ऐसा ही किया।

एक समूह ओलूवेरी के तालाब की तरफ निकल गया था। एक आदमी ने वहॉ जब उसका नाम ले कर पुकारा तो अलान्तेरे तालाब

[33] Oluweri – goddess of the Rivers

की सतह पर आ गयी। उसने बहुत बढ़िया कपड़े और गहने पहने हुए थे और वह बिल्कुल रानी लग रही थी। उसके चारों तरफ सोने और चॉदी की चटाइयॉ थीं।

अलान्तेरे ने एक गीत गाया जिसमें उसने उस आदमी को बताया कि किस तरह उसकी सौतेली मॉ ने उससे काम करवाया और उस पर क्या क्या बीती।

वह आदमी तो यह सब देख सुन कर भौंचक रह गया। वह तुरन्त भागा भागा अलान्तेरे के माता पिता के पास पहुॅचा और जा कर उनको सब कुछ बताया।

अलान्तेरे के माता पिता अपने दोस्तों के साथ उस तालाब पर आये और अलान्तेरे को पुकारा।

अलान्तेरे फिर वैसे ही बढ़िया कपड़े और गहने पहने तालाब की सतह पर आ गयी और यह गीत गाने लगी —

अलान्तेरे अलान्तेरे
देवताओं ने तुझे काम करने से मना किया था
उसके मॉ बाप ने भी हॉ तो की कि वह काम नहीं करेगी
पर जब उसके मॉ बाप नहीं थे तब उसको पीटा गया
उससे काम कराया गया उसको पानी भरने भेजा गया
वह भी ओलूवेरी के अपने तालाब से

अलान्तेरे अलान्तेरे
तभी अचानक देवी आ गयी तालाब की जिसका नाम है ओलूवेरी
वह ले गयी उसको पानी के नीचे कभी न दिखायी देने के लिये
अब वह इस तालाब से आगे कभी दिखायी नहीं देगी

और वह फिर पानी में डूब गयी। अब हर बार जब भी वे तालाब पर आये यही सब हुआ। अलान्तेरे तालाब की सतह पर आती, यह गाना गाती और फिर तालाब में चली जाती।

पर कोई कभी उसको तालाब के बाहर नहीं ला सका।

दुखी पिता एक बार फिर उसी जू जू आदमी के पास गया और उसको अपने साथ हुई घटना बतायी। जू जू आदमी ने पहले जू जू से सीधी प्रार्थना की परन्तु उससे कुछ नहीं हुआ क्योंकि उससे किया गया वायदा तोड़ा जा चुका था।

तब उस जू जू आदमी और पिता ने मिल कर देवताओं की प्रार्थना की मगर वहॉ से भी कुछ नहीं हुआ। ओलूवेरी से भी प्रार्थना की पर उसका भी कोई जवाब नहीं मिला।

अलान्तेरे की कहानी अब सब जगह फैल चुकी थी। कई लोग सहायता के इरादे से आये भी पर कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सका।

एक दिन जब अलान्तेरे का पिता सब तरफ से नाउम्मीद हो चुका था तो एक बाज़[34] आया। उसने भी अलान्तेरे की कहानी सुन रखी थी।

वह उसके पिता की सहायता करना चाहता था पर उसकी कीमत थी बीस मुर्गे।

[34] Translated for the word “Hawk” – see its picture above.

पिता तुरन्त ही राजी हो गया और दोनों ओलूवेरी के तालाब की तरफ चल दिये।

बाज़ ने पिता को उस समय अपनी बेटी को पुकारने के लिये कहा जब वह उस तालाब के ऊपर मॅडराये। कह कर बाज़ उस तालाब के ऊपर उड़ गया और वहॉ जा कर मॅडराने लगा। उस बाज़ को तालाब पर मॅडराते हुए देख कर पिता ने अपनी बेटी को पुकारा।

पिता के पुकारने पर अलान्तेरे तालाब की सतह पर आ गयी तो उस बाज़ ने तुरन्त ही कूद लगा कर उसके बाल पकड़ लिये और उसको धीरे से अपने तेज़ पंजों में पकड़ कर बाहर ले आया। बाहर ला कर उसने अलान्तेरे को उसके पिता के ऑगन में छोड़ दिया।

इस पर घर में बहुत आनन्द मनाया गया और बाज़ को बहुत बहुत धन्यवाद दिया गया। अलान्तेरे के पिता ने बाज़ को न केवल बीस मुर्गे दिये बल्कि और भी बहुत कुछ दिया।

बाज़ बोला ये सारे मुर्गे तो मैं एक साथ नहीं ले जा सकता सो अगर आपको कोई एतराज न हो तो मैं इनको यहीं आप ही के पास छोड़ देता हूॅ और इनको मैं एक एक करके ले जाता रहूॅगा। पिता राजी हो गया।

तब से बाज़ एक एक मुर्गा ले जाता रहता है। किसी को पता नहीं है कि अलान्तेरे के पिता ने उसको कितने मुर्गे देने का वायदा किया था।

पर बस वह तो तबसे आता है और एक एक मुर्गा ले जाता है। उसको यह लगता ही नहीं कि वह चोरी कर रहा है क्योंकि उसको तो अब याद ही नहीं कि उसको कितने मुर्गे ले जाने हैं और वह कितने मुर्गे ले जा चुका है।

# 7 राजकुमार और फकीर[35]

हालॉकि इस लोक कथा की कोई जगह नहीं दी गयी पर इस कहानी से ऐसा लगता है कि यह फारस देश में कही सुनी जाती होगी।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। एक बार यह राजा बाहर गया और एक चौराहे पर जा कर लेट गया जिससे जो कोई उधर से गुजरता वह उसके ऊपर पैर रख कर जाता।

आखिर एक फकीर उधर से निकला तो उसने राजा से पूछा — "ए आदमी तुम यहॉ क्यों लेटे हुए हो?"

राजा बोला — "यहॉ हजारों आदमी आये और आ कर चले गये। तुम भी आये तुम भी चले जाओ।"

फकीर फिर बोला — "मगर तुम हो कौन?"

राजा बोला — "ओ फकीर मैं एक राजा हूॅ। मेरे पास किसी भी चीज़ की सोने की कोई कमी नहीं है। मुझे जीते हुए भी कितने दिन बीत गये पर मेरे कोई बच्चा नहीं है। इसलिये मैं यहॉ आ गया और यहॉ आ कर लेट गया।

[35] The Prince and the Fakir – a folktale from Persia, Asia.
Taken from the Web Site :
http://www.kidsgen.com/stories/folk_tales/the_prince_and_the_fakir.htm

मेरे पाप और अपराध तो बहुत सारे हैं इसी लिये मैं यहाँ आ कर लेट गया हूँ ताकि लोग मेरे ऊपर से हो कर जा सकें और शायद किसी वजह से मेरे सारे पाप धुल जायें और मुझे माफी मिल जाये। भगवान मुझ पर दया करें और मेरे एक बेटा हो जाये।"

यह सुन कर फकीर बोला — "अगर तुम्हारे बेटा हो जाये तो तुम मुझे क्या दोगे?"

राजा बोला — "ओ फकीर जो तुम चाहो।"

फकीर बोला — "चीज़ें और सोना तो मेरे पास भी बहुत है पर मैं तुम्हारे एक प्रार्थना करूँगा जिससे तुम्हारे दो बेटे होंगे। उनमें से एक बेटा मेरा होगा।"

राजा राजी हो गया। फकीर ने दो मिठाई निकालीं और उनको राजा को देते हुए कहा — "ये लो। इनको अपनी उन पत्नियों को दे देना जिन्हें तुम सबसे ज़्यादा प्यार करते हो।"

राजा ने वे मिठाइयाँ ले लीं और उनको अपनी जेब में रख लिया। फकीर फिर बोला — "राजन, मैं एक साल बाद लौटूँगा और जो दो बेटे तुम्हारे पैदा होंगे उन दोनों बेटों में से एक बेटा तुम्हारा होगा और एक बेटा मेरा होगा।"

राजा राजी हो गया। फकीर अपने रास्ते चला गया राजा अपने घर आ गया। राजा के दो रानियाँ थीं उसने वे दोनों मिठाइयाँ उन दोनों को दे दीं।

समय आने पर राजा के दो बेटे हुए। राजा ने उनके लिये धरती के अन्दर कमरे बनवा दिये थे सो उसने उन दोनों बेटों को वहाँ रख दिया। कुछ समय बीत गया। एक दिन फकीर आया और उसने आ कर उससे अपना बेटा माँगा।

राजा अपने किसी भी बेटे को देना नहीं चाहता था सो उसने अपनी दासियों के दो बेटे ला कर उसे दे दिये। जब फकीर ऊपर बैठा हुआ था तो राजा के अपने बेटे उसके नीचे के कमरे में बैठे हुए खाना खा रहे थे।

तभी एक भूखी चींटी वहाँ आयी और एक चावल का दाना ले कर अपने बच्चों के लिये ले कर जा रही थी। तभी एक उससे ज़्यादा ताकतवर चींटी आयी और उसने उसका वह चावल का दाना लेने के लिये उस पर हमला किया।

तो पहली चींटी बोली — "तुम मेरा यह दाना मुझसे क्यों छीन रही हो। मैं तो पहले से ही लँगड़ी हूँ और मुझे अभी केवल यह एक दाना मिला है जिसे मैं अपने बच्चों को खिलाने के लिये ले कर जा रही हूँ।

राजा के बेटे तो नीचे वाले कमरे में बैठे खाना खा रहे हैं। तुम वहाँ जा कर वहाँ से और चावल के दाने ला सकती हो। तुम मुझसे मेरा दाना क्यों छीनती हो?"

यह सुन कर दूसरी चींटी ने उसे छोड़ दिया और उसने उससे चावल नहीं छीना बल्कि वह राजा के बेटों के पास जहॉ वे खाना खा रहे थे चावल लाने के लिये चली गयी।

फकीर ने जब यह सुना तो राजा से कहा — "राजन ये तुम्हारे बच्चे नहीं है। जाओ और उन बच्चों को ले कर आओ जो नीचे वाले कमरे में बैठे खाना खा रहे हैं।"

यह सुन कर राजा नीचे गया और अपने बच्चों को ले कर आ गया। फकीर ने उसके बड़े बेटे को चुना और उसको ले कर चला गया। जब वह उसको ले कर घर आ गया तो उसने उसे ईंधन लाने के लिये भेजा।

सो राजा का बेटा गाय का गोबर लाने के लिये बाहर चला गया। जब उसने कुछ गोबर इकट्ठा कर लिया तो वह उसे ले कर घर वापस लौटा। फकीर ने राजा के बेटे की तरफ देखा और उसने गोबर में आग जला कर उसके ऊपर एक बड़ा सा बरतन रख दिया।

फिर उसने उसको अपने पास बुलाया "आओ मेरे शिष्य।"

राजा का बेटा बोला — "पहले गुरू बाद में चेला।"

फकीर ने उसको एक बार फिर बुलाया दोबारा बुलाया तिबारा बुलाया पर हर बार उसने यही जवाब दिया "पहले गुरू बाद में चेला।"

इस पर फकीर उसके ऊपर दौड़ा ताकि वह उसको पकड़ कर बरतन में डाल सके। उस बरतन में करीब करीब सौ गैलन तेल था और उसके नीचे आग जल रही थी।

तब राजा के बेटे ने फकीर को उठाया और एक झटके से उस बरतन में फेंक दिया। तेल के अन्दर गिरते ही वह उसमें जल कर मर गया। वह तो तला हुआ मॉस बन गया था।

तभी उसने देखा कि फकीर की एक चाभी वहॉ पड़ी हुई है। उसने उस चाभी को उठा लिया और उससे उसके घर का दरवाजा खोला। उसने देखा कि उसके घर में तो बहुत सारे आदमी कैद थे। दो घोड़े खड़े हुए थे दो सिमूर[36] चिड़ियें थीं दो चीते भी थे।

राजा के बेटे ने सबको छोड़ दिया वे सब भगवान को धन्यवाद देते हुए वहॉ से चले गये। उसने जेल में बन्द सभी कैदियों को छोड़ दिया। उसने अपने साथ दो घोड़े लिये दो चीते लिये दो कुत्ते लिये दो सिमूर्ग चिड़ियें लीं और वहॉ से किसी दूसरे देश चल दिया।

जब वह सड़क पर जा रहा था तो उसने एक गंजे आदमी को अपने ऊपर देखा जो बछड़ों को घास चरा रहा था। वह उससे बोला — "क्या तुम थोड़ा सा भी लड़ सकते हो?"

[36] Simourg bird is a mythical bird of Persia and Iran. It is sometimes equated with the mythical bird Phoenix and Huma. It is mentioned by King Solomon while explaining the miracle of the wooden log which helped him breaking the huge size of stones for his famous temple to the Queen of Sheba. To read this inastance read "Sheba Ki Rani Makeda Aur Raja Solomon" by Sushma Gupta, Delhi: Prabhat Prakashan. 2018.

राजा के बेटे ने जवाब दिया — "जब मैं बहुत छोटा था तब मैं थोड़ा बहुत लड़ सकता था पर अगर अब मुझसे कोई लड़ना चाहे तो मैं इतना भी नामर्द नहीं जो मैं पीठ फेर लूँ। आओ मैं तुमसे लड़ सकता हूँ।"

वह गंजा आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हें उठा कर फेंक दूँ तो तुम मेरे नौकर हो जाना और अगर तुम मुझे उठा कर फेंक दोगे तो मैं तुम्हारा नौकर हो जाऊँगा।" इस शर्त पर दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी। राजा के बेटे ने उसे उठा कर फेंक दिया।

इस पर राजा के बेटे ने कहा — "मैं अपने जानवर यहाँ छोड़ देता हूँ – मेरी सिमूर चिड़ियें मेरे चीते मेरे कुत्ते और मेरे घोड़े। मैं तब तक शहर देख कर आता हूँ। मेरा चीता मेरे इन जानवरों की रखवाली करेगा। और क्योंकि तुम मेरे नौकर हो इसलिये तुम भी यहीं मेरी इन चीज़ों के पास ही रहो।"

राजा का बेटा शहर देखने चला गया। चलते चलते वह एक तालाब के पास आया तो उसने सोचा कि वह वहाँ रुक कर उस तालाब में नहा ले सो उसने अपने कपड़े उतारने शुरू किये।

उस समय उस देश के राजा की बेटी अपनी छत पर बैठी हुई थी। उसने उसके शाही निशान देखे तो वह बोली — "यह आदमी तो राजा है। अगर मुझे शादी करनी है तो मैं इसी से शादी करूँगी और किसी से भी नहीं।"

सो वह अपने पिता के पास गयी और उससे कहा कि वह शादी करना चाहती है। उसके पिता ने कहा यह तो बहुत अच्छी बात है।

तब राजा ने एक फरमान निकाला "सारे छोटे और बड़े आदमी आज मेरे दरबार में हाजिर हों क्योंकि राजा की बेटी अपना पति चुनना चाहती है।"

यह सुन कर उस देश के सारे लोग राजा के दरबार में हाजिर हुए। यह यात्री राजकुमार भी वहॉ गया। इसने एक फकीर के से कपड़े पहन रखे थे और सोचा कि यह भी इस रस्म में जरूर जायेगा सो यह भी अन्दर जा कर बैठ गया।

राजा की बेटी आयी और आ कर ऊपर के बरामदे में आ कर बैठ गयी। उसने चारों तरफ निगाह डाली तो देखा कि वह राजकुमार एक फकीर के वेश में वहॉ बैठा हुआ है।

राजकुमारी ने अपनी दासी से कहा — "ले यह मेंहदी[37] का कटोरा ले और देख उस यात्री के पास जा जो फकीर के वेश में बैठा हुआ है और इस कटोरे में से उसके ऊपर मेंहदी छिड़क दे।"

दासी ने राजकुमारी के हुकुम का पालन किया। वह वहॉ गयी और उसके ऊपर मेंहदी छिड़क आयी। लोग बोले "लगता है कि राजकुमारी की दासी से कहीं कोई गलती हो गयी है।"

यह सुन कर राजकुमारी बोली — "इसमें दासी ने कहीं कोई गलती नहीं की है। इसमें तो उसकी मालकिन ने ही गलती की है।"

[37] Translated for the word "Henna"

यह सुन कर राजा ने उस फकीर से अपनी बेटी की शादी कर दी जो सचमुच में एक फकीर न हो कर एक राजकुमार था। जो उस देश की किस्मत में लिखा हुआ था वही हुआ। उन दोनों की शादी हो गयी।

राजा ने यह शादी कर तो दी थी पर वह मन ही मन बहुत दुखी था क्योंकि वहॉ जब इतने सारे सरदार और कुलीन लोग बैठे हुए थे तो उसकी बेटी ने उनमें से किसी एक को क्यों नहीं चुना। बल्कि उस फकीर को चुना। पर उसने अपना यह विचार अपने मन में ही रखा।

एक दिन यात्री राजकुमार ने कहा कि राजा के सब दामाद आयें और आज मेरे साथ शिकार को चलें। राजा के दामादों और दूसरे लोगों ने सोचा कि यह फकीर क्या शिकार करेगा।

खैर वह सब शिकार के लिये तैयार हुए और एक तालाब पर मिलने का प्रोग्राम बनाया। यात्री राजकुमार अपने चीतों और कुत्तों के पास गया और उनसे कई सारे हिरन और दूसरे जानवर मार लाने के लिये कहा।

फिर ये शिकार ले कर वह उसी तालाब पर आया जहॉ उनको मिलना था। और दूसरे राजकुमार और राजा के दामाद भी वहॉ आ गये पर उनके पास कोई शिकार ही नहीं था जबकि इस नये दामाद के पास बहुत सारे शिकार थे।

वहॉ से फिर वे सब अपने अपने शिकारों के साथ शहर लौटे और अपने अपने शिकार दिखाने के लिये राजा के पास गये।

राजा के कोई बेटा नहीं था। तब नये दामाद ने राजा को बताया कि वह खुद भी एक राजकुमार है। यह सुन कर राजा तो बहुत खुश हो गया और उसको हाथ पकड़ कर गले लगा लिया।

उसने उसको अपन पास बिठाया और कहा — "ओ राजकुमार मैं भगवान का धन्यवाद करता हूॅ कि उसने तुम्हें यहॉ भेज दिया और तुम हमारे दामाद बने। मैं बहुत खुश हूॅ और अपना राज्य तुम्हें देता हूॅ।

# 8 आदमी जो सम्पूर्ण बनना चाहता था[38]

शर्तों पर बच्चे की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक सन्यासी एक राजा से मिलने आया। उस राजा के कोई बच्चा नहीं था। सन्यासी ने राजा से कहा — "क्योंकि तुमको एक बेटा चाहिये तो मैं तुम्हारी रानी को एक ऐसी दवा दे सकता हूँ जिसको खा कर उसे जुड़वॉ बच्चे पैदा होंगे।

पर यह दवा मैं तुमको इस शर्त पर दूँगा कि जब वे जुड़वॉ बच्चे पैदा होंगे तो तुम उनमें से एक बच्चा मुझे दे दोगे और दूसरा तुम रख लोगे।"

राजा को सन्यासी की यह शर्त कुछ मुश्किल सी तो जरूर लगी पर फिर भी क्योंकि उसको एक बेटे की बहुत जरूरत थी जो उसका नाम चलाता उसके पैसे जायदाद और राज्य का मालिक बनता उसने उसकी यह शर्त मान ली।

उस सन्यासी ने उसको वह दवा दे दी और रानी ने उसको खा लिया। समय आने पर उसने जुड़वॉ बच्चों को जन्म दिया। ये

---

[38] The Man Who Wished to be Perfect (Tale No 13) – a folktale from India, Asia.
Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/The_Man_who_wished_to_be_Perfect
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

जुड़वॉ बच्चे एक साल के हुए फिर दो साल के हुए फिर तीन साल के हुए फिर चार साल के हुए फिर पॉच साल के हुए पर वह सन्यासी अपना बच्चा लेने के लिये वापस नहीं आया।

राजा और रानी ने सोचा कि क्योंकि सन्यासी काफी बुड्ढा था इसलिये हो सकता है कि वह मर गया हो। इस विचार ने उनके दिमाग से बच्चे को ले जाने का डर बिल्कुल ही निकाल दिया।

पर वह सन्यासी भी मरा नहीं था वह तो ज़िन्दा था और बस ज़रा साल गिन रहा था। बच्चे को ले जाने के लिये समय का इन्तजार कर रहा था।

दोनों राजकुमार बड़े हो कर अपनी अपनी पढ़ाई में लग गये थे और दोनों बहुत अच्छा कर रहे थे। वे घुड़सवारी और तीर चलाने में भी बहुत होशियार होते जा रहे थे। इसके अलावा वे बहुत सुन्दर थे तो लोग जब उनको देखते तो देखते के देखते ही रह जाते।

जब दोनों राजकुमार सोलह साल के हो गये तब वह सन्यासी राजा के महल में आया और राजा से अपना वायदा पूरा करने के लिये कहा।

राजा और रानी का दिल तो उन दोनों राजकुमारों में इतना खोया हुआ था कि वे उनसे बिछड़ने की सोच ही नहीं सकते थे। और उस सन्यासी के बारे में तो उन्होंने यह सोच रखा था कि वह अब इस दुनियॉ में है ही नहीं तो वे तो यह देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गये कि वह तो हाड़ मॉस के बने शरीर में उनके

सामने खड़ा था और उनका एक नौजवान राजकुमार अपने लिये माँग रहा था।

राजा और रानी उसको देखते ही दुख के समुद्र में डूब गये। पर वे कुछ नहीं कर सकते थे सिवाय इसके कि वे अपने एक बेटे को अपने से अलग कर दें।

वे सोच रहे थे क्योंकि जब वह हमें दवा दे कर जुड़वाँ बच्चे दे सकता है तो वह हमको शाप दे कर हमारे बच्चों को भस्म भी कर सकता है। और न केवल बच्चों को बल्कि राजा रानी महल और राज्य को भी अपने जूतों तले कुचल सकता है।

पर वह उनमें से उस सन्यासी को किस राजकुमार को दे। उनके लिये तो दोनों ही एक से ज़्यादा एक प्यारे थे। राजा और रानी तो बस डर के मारे अपने दिल ही दिल में परेशान हो रहे थे कि वे करें तो क्या करें।

और जहाँ तक राजकुमारों का सवाल था दोनों ही यह कह रहे थे कि "मैं जाऊँगा, मैं जाऊँगा।"

छोटे राजकुमार ने बड़े भाई से कहा — "तुम मुझसे बड़े हो, चाहे कुछ मिनट ही बड़े हो इसलिये तुम पिता जी के वारिस हो। इसलिये तुम घर पर रहो। मैं इस सन्यासी के साथ जाऊँगा।"

इस पर बड़े राजकुमार ने छोटे राजकुमार से कहा — "तुम मुझसे छोटे हो तुम माँ की खुशी हो इसलिये तुम घर पर रहो मैं सन्यासी के साथ जाऊँगा।"

काफी देर की बहस के बाद, काफी देर तक रोने धोने के बाद, रानी के रो रो कर अपने कपड़े भिगो लेने के बाद बड़े राजकुमार को सन्यासी के साथ भेज दिया गया।

पर महल छोड़ने से पहले बड़े राजकुमार ने महल के ऑगन में एक पेड़ लगाया और अपने माता पिता और भाई से कहा — "यह पेड़ मेरी ज़िन्दगी है। जब तक तुम लोग यह देखो कि यह पेड़ ताजा और हरा है तो समझना कि में बिल्कुल ठीक हूँ।

पर जब तुम लोग यह देखो कि यह पेड़ कहीं कहीं से सूख रहा है तो समझना कि मैं किसी मुसीबत में फॅस गया हूँ। और जब तुम देखो कि यह सारा पेड़ सूख गया है तो समझना कि मैं मर गया हूँ और अब इस दुनियॉ से चला गया हूँ।"

यह कह कर उसने अपने माता पिता को और अपने भाई को गले लगाया और उस सन्यासी के साथ चला गया।

जब सन्यासी और राजकुमार जंगल की तरफ जा रहे थे तो उन्होंने सड़क पर कुछ पिल्ले[39] घूमते देखे। एक पिल्ले ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ मैं उस सुन्दर नौजवान आदमी के साथ जाना चाहता हूँ। वह मुझे एक राजकुमार लगता है।"

मॉ ने कहा — "जाओ बेटा।"

[39] Translated for the word "Whelp". This means puppies also.

राजकुमार ने खुशी से उसको अपना साथी बना लिया और आगे चल दिया। वे लोग कुछ दूर ही चले होंगे कि सड़क के पास लगे एक पेड़ पर उन्होंने एक बाज़[40] बैठा देखा। उसके साथ उसके बच्चे भी बैठे हुए थे।

उनमें से एक बच्चे ने अपनी माँ से कहा — "माँ मैं उस सुन्दर नौजवान आदमी के साथ जाना चाहता हूँ। वह मुझे एक राजकुमार लगता है।"

उसकी माँ ने भी कहा — "जाओ बेटा।"

और राजकुमार ने उसको भी खुशी खुशी अपने साथ ले लिया। इस तरह से सन्यासी, राजकुमार, पिल्ला और चील सब एक साथ अपनी यात्रा पर चल दिये।

अब वे एक जंगल में आ पहुँचे थे जो बस्ती के बाहर था। जहाँ वे एक फूस की छत पड़ी हुई झोंपड़ी के पास आ कर रुक गये। यह सन्यासी के रहने की जगह थी।

यहाँ आ कर सन्यासी ने राजकुमार से कहा — "तुम यहाँ इस झोंपड़ी में मेरे साथ रहोगे। तुम्हारा काम होगा जंगल से मेरी पूजा के लिये फूल चुन कर लाना।

इसके अलावा तुम सिवाय उत्तर दिशा के और कहीं भी जा सकते हो। पर अगर तुम उत्तर दिशा की तरफ गये तो सोच लेना

[40] Translated for the word "Hawk" – see ts picture above.

वहॉ तुम्हारी जान को खतरा है। तुम कोई सा भी फूल या फल खा सकते हो और पीने का पानी तुमको एक झरने से मिलेगा।"

राजकुमार को न तो वह जगह ही नापसन्द लगी और न ही अपना काम। वह सुबह ही जंगल से फूल चुनने चला जाता वहॉ से फूल ला कर सन्यासी को दे देता। उसके बाद सन्यासी दिन भर के लिये कहीं चला जाता और फिर शाम ढले तक ही लौटता।

इस तरह राजकुमार के पास सारा दिन का समय केवल अपने लिये ही होता। वह अपने दोनों साथियों पिल्ले और बाज़ बच्चे के साथ जंगल में घूमता रहता।

वह अपने तीर से हिरन मारता जो वहॉ पर बहुत सारे थे और इस तरह से अपने समय का सबसे अच्छा इस्तेमाल करता। एक बार उसने अपने तीर से एक बारहसिंगा मारा तो वह घायल हो कर उत्तर की तरफ भाग लिया।

उस समय राजकुमार को सन्यासी की बात याद नहीं रही और वह भी उस बारहसिंगे के पीछे पीछे उत्तर की तरफ चल दिया। थोड़ी देर में ही बारहसिंगा एक बहुत सुन्दर घर में घुस गया जो वहीं पास में ही था।

उस बारहसिंगे के पीछे पीछे राजकुमार भी उस घर में घुस गया पर वहॉ उसको वह बारहसिंगा दिखायी देने की बजाय एक बहुत ही

सुन्दर लड़की दिखायी दे गयी। वह दरवाजे के पास ही बैठी थी और उसके सामने पॉसे के खेल[41] की एक मेज लगी हुई थी।

राजकुमार तो उस लड़की की सुन्दरता को देखता हुआ उसी जगह चिपक गया।

लड़की ने कहा — "आओ ओ अजनबी आओ। तुम्हारी किस्मत तुम्हें यहॉ खींच लायी है पर तुम मेरे साथ एक बाज़ी खेले बिना नहीं जाना।"

राजकुमार मान गया। अब वह खेल तो पॉसे का था तो यह निश्चय हुआ कि अगर राजकुमार हार गया तो वह उस लड़की को अपना बाज़ दे देगा। और अगर वह लड़की हारी तो वह भी राजकुमार के बाज़ जैसा बाज़ उसको दे देगी।

बाज़ी खेली गयी और वह लड़की जीत गयी। उसने राजकुमार का बाज़ ले लिया और उसे एक तख्ते से ढके हुए गड्ढे में रख दिया। राजकुमार ने एक और बाज़ी खेलने के लिये कहा तो लड़की राजी हो गयी।

अबकी बार की शर्त भी कुछ वैसी ही थी कि अगर लड़की जीत गयी तो राजकुमार उसको अपना पिल्ला दे देगा और अगर राजकुमार जीत गया तो वह लड़की उसको वैसा ही एक पिल्ला दे देगी।

[41] Dice Game table

वह लड़की फिर से वह बाज़ी जीत गयी तो राजकुमार ने अपना पिल्ला उसको दे दिया। उस लड़की ने वह पिल्ला ले कर एक तख्ते से ढके एक दूसरे गड्ढे में रख दिया।

राजकुमार ने फिर यानी तीसरी बार खेल खेलने के लिये कहा तो लड़की ने फिर से हॉ कर दी।

इस बार शर्त यह थी कि अगर राजकुमार अबकी बार हार गया तो वह अपने आपको उस लड़की को सौंप देगा और फिर वह लड़की उसके साथ कुछ भी करे। और अगर लड़की हार गयी तो वह राजकुमार को उसके जैसा ही एक नौजवान दे देगी।

खेल शुरू हुआ और लड़की एक बार फिर जीत गयी। उसने राजकुमार को पकड़ लिया और उसको एक तीसरे तख्ते से ढके गड्ढे में बन्द कर दिया।

यह सुन्दर लड़की कोई लड़की नहीं थी बल्कि एक राक्षसी थी जो आदमी का मॉस खा कर ज़िन्दा रहती थी।

असल में जैसे ही उसने राजकुमार का कोमल शरीर देखा तो उसके मुँह में पानी भर आया पर क्योंकि उस दिन वह खाना खा चुकी थी इसलिये उसने राजकुमार वाला खाना अगले दिन के लिये रख दिया था।

अब जैसे ही यह सब यहॉ हुआ तो राजकुमार के घर में रोना पीटना मच गया। क्यों?

तुम्हें याद होगा कि जब राजकुमार ने महल छोड़ा था तो वह महल के ऑगन में अपनी ज़िन्दगी का एक पेड़ लगा आया था। और सबसे कह आया था कि वह पेड़ अगर हरा भरा और ताजा है तो वह ठीक ठाक है नहीं तो... ।

सो बड़े राजकुमार का छोटा भाई रोज अपने बड़े भाई के अपने हाथ से लगाये गये पेड़ को देखता था कि वह हरा भरा और ताजा दिखायी देता है कि नहीं। अब तक उस पेड़ की पत्तियॉ सब हरी भरी और ताजा थीं।

पर उस दिन जिस दिन राजकुमार के साथ यह घटना घटी उसने देखा कि उस पेड़ की कुछ पत्तियॉ कुछ मुरझायी सी हो रही थीं। उसने यह बात राजा और रानी को बतायी कि किस तरह से उस पेड़ की पत्तियॉ मुरझा रही थीं।

उन्होंने इसका यह मतलब निकाला कि बड़े राजकुमार की ज़िन्दगी खतरे में थी। सो छोटे राजकुमार ने यह तय किया कि वह अपने बड़े भाई की सहायता के लिये जायेगा।

उसने भी जाने से पहले महल के ऑगन में अपने बड़े भाई के लगाये जैसा ही एक पेड़ लगाया जो उसकी अपनी ज़िन्दगी का पेड़ था। उसने राजा की घुड़साल से सबसे तेज़ दौड़ने वाला एक घोड़ा लिया और जंगल की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसको भी एक कुत्ते के साथ एक पिल्ला मिला। उस पिल्ले ने सोचा कि शायद यह वही सवार है जो उसके साथी पिल्ले

को ले गया था क्योंकि जुड़वॉ होने की वजह से वे दोनों राजकुमार एक जैसे ही लगते थे।

वह पिल्ला उससे बोला — "जैसे तुम मेरे भाई को ले गये थे ऐसे ही तुम मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

छोटे राजकुमार ने सोचा कि शायद मेरा भाई यहॉ से एक पिल्ले को ले गया होगा सो उसने भी उस पिल्ले को अपने साथ ले लिया।

वह आगे चला तो उसको एक पेड़ पर बैठा हुआ एक बाज़ मिला। वह भी उस राजकुमार से बोला — "तुम मेरे भाई को ले गये थे इसी तरह से तुम मुझे भी ले चलो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूॅ।"

राजकुमार ने सोचा कि शायद मेरा बड़ा भाई इसके भाई को अपने साथ ले गया होगा सो उसने भी उसको अपने साथ ले लिया।

अपने इन साथियों के साथ अब वह बीच जंगल में पहुॅच गया। वहॉ उसने एक झोंपड़ी देखी जिसको देख कर उसको लगा कि शायद वह झोंपड़ी उसी सन्यासी की ही होगी जो उसके भाई को ले गया था। पर न तो वहॉ सन्यासी ही था और न उसका भाई ही।

अब उसकी यही समझ में नहीं आ रहा था कि वह वहॉ से कहॉ जाये और क्या करे। वह अपने घोड़े से उतर गया और उसको वहॉ चरने के लिये छोड़ दिया और वह खुद उस झोंपड़ी में बैठ गया।

शाम को वह सन्यासी घर लौटा तो छोटे राजकुमार को देख कर उससे बोला — "मुझे तुम्हें यहॉ देख कर बहुत खुशी हुई राजकुमार। मैंने तुम्हारे भाई को मना किया था कि उत्तर की तरफ

कभी मत जाना क्योंकि उधर की तरफ जाने से उसको खतरा हो सकता था पर लगता है कि उसने मेरा कहा नहीं माना नहीं और वह उधर ही की तरफ चला गया। वहाँ एक राक्षसी रहती है लगता है कि वह उसके फन्दे में फँस गया है।

उसको वहाँ से बचा कर लाने की कोई उम्मीद नहीं है। हो सकता है कि वह उसको अब तक खा भी गयी होगी।"

यह सुन कर छोटा राजकुमार तुरन्त ही उत्तर की तरफ चल दिया। उधर की तरफ जाने पर उसके एक हिरन मिला जिसको उसने अपना तीर मारा तो वह पास में बने एक घर में घुस गया।

वह भी उसके पीछे पीछे उस घर में घुस गया। उसको ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ जब उसने हिरन की जगह वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की को बैठे देखा।

उसको तुरन्त ही याद आ गया जो उस सन्यासी ने उससे कहा था कि वह लड़की लड़की नहीं बल्कि एक राक्षसी थी और उसी के कब्जे में उसका भाई था।

उस लड़की ने उससे भी पाँसे का एक खेल खेलने के लिये कहा। उसने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। वे लोग भी उसी शर्त पर अपनी बाजी खेले जिस पर बड़ा राजकुमार खेला था।

पर इस खेल में छोटा राजकुमार जीत गया तो उस लड़की ने वह पहले वाला बाज़ गड्ढे में से निकाल कर उसको दे दिया। दोनों बाज़ आपस में मिल कर बहुत खुश थे।

उस लड़की और छोटे राजकुमार ने दूसरी बाज़ी खेली तो छोटा राजकुमार फिर जीत गया। इस बार लडकी ने गड्ढे में से निकाल कर पहला वाला पिल्ला उसको दे दिया। यह पिल्ला भी अपने भाई को देख कर बहुत खुश हुआ।

वे तीसरी बार खेले तो छोटा राजकुमार फिर से जीत गया। लड़की ने वायदा किया था कि अगर राजकुमार जीतेगा तो वह उसको उस जैसा ही राजकुमार देगी पर उसने बहाना बनाया कि उसके लिये वैसा राजकुमार लाना तो नामुमकिन था।

पर छोटा राजकुमार उससे अपनी शर्त मनवाने पर अड़ा रहा। सो उसने उसका भाई उसको गड्ढे में से निकाल कर ला कर दिया। दोनों भाई एक दूसरे से मिल कर बहुत खुश हुए।

राक्षसी ने उन दोनों राजकुमारों से कहा — "मुझे मत मारना। मैं तुमको एक भेद की बात बताती हूँ जिससे तुम्हारे बड़े भाई की जान बच जायेगी।"

तब उसने उन दोनों को बताया कि वह सन्यासी मॉ काली का बहुत बड़ा भक्त था। मॉ काली का मन्दिर वहीं पास में था।

वह सन्यासी उस समूह का था जिसमें लोग मरे हुओं की आत्मा से मिल कर सम्पूर्णता[42] को हासिल करते हैं। वह काली की वेदी पर अब तक छह लोगों की बलि दे चुका है जिनकी खोपड़ियॉ मन्दिर की आलमारी में देखी जा सकती हैं।

[42] Translated for the word "Perfection".

जब वह सातवीं बलि दे देगा तब वह सम्पूर्ण हो जायेगा। और यह सातवीं बलि बड़े राजकुमार की होगी।"

राक्षसी ने आगे कहा — "तुम तुरन्त ही काली के मन्दिर चले जाओ और वहाँ जा कर सच का पता करो कि मैंने जो कुछ तुमसे कहा है वह सच है कि नहीं।"

सो दोनों भाई काली के मन्दिर गये। जब बड़ा राजकुमार मन्दिर में घुसा तो वहाँ रखी खोपड़ियाँ एक बहुत ही भयानक हँसी हँसीं।

वह भयानक दृश्य देख कर और इस भयानक हँसी की आवाज सुन कर दोनों भाई डर गये और उनसे इस हँसी की वजह पूछी। खोपड़ियाँ बोलीं कि वे इसलिये हँसीं क्योंकि वे बहुत खुश थीं कि उनका एक और साथी आ गया।

उनमें से एक खोपड़ी सबकी तरफ से बोली — "ओ नौजवान राजकुमार, कुछ ही दिनों में इस सन्यासी की पूजा खत्म हो जायेगी। फिर तुम इस मन्दिर में लाये जाओगे और तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा। फिर तुम हमारे साथ ही रहोगे।

पर एक तरीका है जिससे तुम भी अपनी इस तरह की बदकिस्मती से बच सकते हो और साथ में हमारा भी भला कर सकते हो।"

राजकुमार ने कहा — "मेहरबानी करके मुझे वह तरीका बताइये। मैं वायदा करता हूँ कि मुझसे आप सबके लिये जो कुछ भी अच्छा होगा वह मैं करूँगा।"

खोपड़ी बोली — "जब वह सन्यासी तुम्हारी बलि देने के लिये तुम्हें इस मन्दिर में ले कर आयेगा तो वह तुमसे मॉ काली के सामने जमीन पर लेट कर उसकी मूर्ति को सिर झुकाने के लिये कहेगा और फिर जब तुम काली मॉ के सामने लेट जाओगे तब वह तुम्हारा गला काट देगा।

पर तुम हमारी सलाह मानोगे तो तुम बच सकते हो। जब वह तुमसे मॉ काली के सामने सिर झुकाने के लिये कहे तो तुम उससे कहना कि क्योंकि तुम एक राजकुमार हो इसलिये तुमने कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया। तुम जानते ही नहीं कि सिर झुकाना क्या होता है।

तुम फिर उस सन्यासी से कहना कि वह तुम्हें तुम्हारे सामने ही मॉ काली के सामने सिर झुका कर बताये कि सिर कैसे झुकाते हैं। और जब वह तुमको सिर झुका कर बताये तब तुम अपनी तलवार से उसका सिर उसके धड़ से अलग कर देना।

जैसे ही तुम उसको मारोगे तो हम सब ज़िन्दा हो जायेंगे क्योंकि सन्यासी की पूजा अधूरी रह जायेगी।"

बड़े राजकुमार ने उन खोपड़ियों को उनकी इस सलाह के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने छोटे भाई को साथ ले कर सन्यासी की झोंपड़ी में वापस चला गया।

कुछ दिन बाद सन्यासी की पूजा खत्म हो गयी। अगले दिन उसने बड़े राजकुमार से कहा कि वह उसके साथ काली मॉ के मन्दिर

चले। वह वहॉ क्यों चले यह उसने नहीं बताया पर राजकुमार को पता था कि वह उसको वहॉ उसकी बलि चढ़ाने के लिये ही ले कर जा रहा है।

छोटा राजकुमार भी उनके साथ गया पर उसको मन्दिर के अन्दर जाने की इजाज़त नहीं थी।

सन्यासी काली के सामने जा कर खड़ा हो गया और बड़े राजकुमार से बोला — "काली मॉ के सामने सिर झुकाओ।"

राजकुमार बोला — "मैं तो राजकुमार हूॅ। राजकुमार होने के नाते मैंने कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया। मुझे नहीं मालूम कि किसी के सामने सिर कैसे झुकाया जाता है। पहले मुझे आप अपना सिर झुका कर दिखाइये तब मैं खुशी से अपना सिर झुका पाऊॅगा।"

यह सुन कर सन्यासी ने कहा देखो सिर ऐसे झुकाते हैं और वह काली मॉ की मूर्ति के सामने सिर झुका कर लेट गया।

और जब उसने ऐसा किया तो राजकुमार ने तुरन्त ही अपनी तलवार से उसका सिर उसके धड़ से अलग कर दिया।

तुरन्त ही वे सब खोपड़ियॉ बहुत ज़ोर से हॅस पड़ीं। काली मॉ भी राजकुमार पर बहुत खुश हो गयीं और उसको सम्पूर्णता का वरदान दिया जिसके लिये वह सन्यासी इतने दिनों से कोशिश कर रहा था।

सब खोपड़ियॉ अपने अपने शरीरों से जा कर मिल गयीं और ज़िन्दा हो गयीं और दोनों राजकुमार सकुशल अपने देश लौट गये।

# देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

**Facebook Group**
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

# लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

**1998** में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**